

# प्यास का दरख्ता



ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी'

(ગુજરાત સંગ્રહ)

# એયારસ કા દર્રિયા



अनुभव प्रकाशन

गाजियाबाद • दिल्ली • देहरादून • लखनऊ

(ગુજરાત સંગ્રહ)

# ઘ્યારસ કા દર્રિયા

बी.के. વર્મા ‘શૈદી’

**ANUBHAV PRAKASHAN**  
e-mail : anubhavprakashan@gmail.com

o

ISBN : 978-93-84772-72-7

o

प्रकाशक

अनुभव प्रकाशन

संस्थापक : (स्व.) डॉ. श्याम निर्मम

o

प्रधान कार्यालय :

ई-28, लाजपत नगर, साहिवावाद, गाजियाबाद-5

फोन : 09911179368, 09811279368

दिल्ली कार्यालय :

डी-199 (पहली मंजिल), आनंद विहार, दिल्ली-92

o

मूल्य : एक सौ पचास रुपये

प्रथम संस्करण : 2018

कॉपीराइट : वी.के. वर्मा 'शैदी'

मुद्रक : श्रीजी ग्राफिक्स, दिल्ली-32

o

## इंतिसाब (समर्पण)

मारुफ शुअरा-ए-गिरामी

आलीजनाब

शकील शिफ़ाई साहब,

डॉ. शम्सुल हसन आविदी 'शम्स' साहब

व

विजेन्द्र सिंह 'परवाज़' साहब

को

जो अपने खुलूस, नेक ख्वाहिशात व मश्वरों से मुझे

मुसलसल नवाज़ते रहे



## जनाबे-शेदी

मोहतरम “शेदी” साहब की 300 ग़ज़लें मेरे हाथों में हैं जो उन्हीं की अदवी तहरीर हैं। मुझे ये ग़ज़लें नज़रे-सानी के लिये भेजी गयी हैं। जैसे ही मैं ग़ज़लों को पढ़ा शुरू करता हूँ तो यक़ीनन इस नतीजे पर आ जाता हूँ कि इनमें किसी भी तरमीम की गुंज़ाइश नहीं है।

“शेदी” साहब ने अपनी क़लम को पुख्तगी, रवानी और खूबसूरती देते हुए इन्हें अजीब-अजीब फ़्लसफ़ों में ढाला है। उनका रूमानी अन्दाज़ हो कि क्लासिकी, दोनों को उन्होंने वखूबी निभाया है। उनकी ग़ज़लों से उनका तख़्लीकी Talent साफ़ ज़ाहिर होता है। मुझे ग़ालिब का एक मिस्रा इंसाफ़ी तौर पर उनकी तरफ़ खींच लाता है : “हम सुखनफ़हम हैं, ग़ालिब के तरफ़दार नहीं।”

मैंने इन ग़ज़लों को पढ़ते हुए इन्हें सुखनफ़हमी की बुनियाद पर देखा और परखा है। वाक़ई ऐसी ग़ज़लें पढ़ी जानी चाहिये, क्योंकि ये क़ारी को उस माहौल में ले जाती हैं जो ज़ज्बात के साथ-साथ दिमाग़ी पहलू भी उजागर करता है और एक पुरसुकून माहौल में क़ारी को ले जाता है। मैं दुआ करता हूँ कि “शेदी” साहब यूँ ही अपनी तख़्लीकात से जुड़े रहें और ईमानदारी से अपने मुतालए और मेहनत की बुनियाद पर रहगुज़ारे-अदब पर महवे-सफ़र रहें। आमीन्।

- विजेन्द्र सिंह ‘परवाज़’

406 बी, गुलमोहर ग्रीन्स,  
(हिंडन एयरफोर्स के सामने)  
मोहन नगर, ग़ाज़ियाबाद-201007  
मो : 9412285618

## बहुमुखी प्रतिभावान् ‘शैदी’ जी

एक संवेदनशील व्यक्ति का परिवेश ही उसके विचारों को प्रभावित करता है। परिवेशजन्य परिस्थितियाँ ही एक रचनाकार को उद्देलित करती हैं। इस उद्देलन का घनत्व ही साहित्यकार को किसी विधा-विशेष में रचना करने के लिये प्रवृत्त करता है।

पिछले कुछ दशकों में यह देखने में आया है कि कई रचनाकारों ने ग़ज़ल को एक जुनून की तरह अपनाया है। कुछ स्वनामधन्य गीतकार तो अपनी उठान में ही ग़ज़लें कहने में इस क़दर मुब्लिला हुए कि न गीतकार रह पाये और न बतौर ग़ज़लकार उनको रेखांकित किया जा सका। अक्सर यह देखा गया है कि साहित्यकार एक विधा विशेष के लिये ही जाने जाते हैं। जैसे दोहाकार, गीतकार, नवगीतकार, ग़ज़लकार या कहानीकार, वगैरह। बहुत कम ऐसा देखने में आता है कि साहित्यकार एक से अधिक विधाओं के लिये जाना जाता हो या उनमें निष्णात हो। अपवाद स्वरूप उदाहरण हर क्षेत्र में मिल जाते हैं, जैसे ब्रज किशोर वर्मा ‘शैदी’! जी हाँ, शैदी साहेब न केवल ग़ज़लगों के रूप में लब्धप्रतिष्ठ हैं अपितु उनके दोहा संग्रह, गीत संग्रह, कल्तात संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कई ऩज़्म संग्रह, मसनवी, हास्य व्यंग्य, बाल गीत और संस्मरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि इस रचनाकार ने साहित्य की कई विधाओं में अपना लोहा मनवाया है।

किसी भी रचनाकार का बहु-पठित और बहु-श्रुत होना नितान्त आवश्यक है। ‘शैदी’ साहेब का रचना संसार उनके व्यापक और गहन अध्ययन की गवाही देता है। ग़ज़लों में प्रयुक्त उनका विपुल शब्द भंडार तथा शब्दों का चमत्कारिक और सटीक प्रयोग इस तथ्य को न केवल रेखांकित करता है अपितु प्रमाणित भी करता है।

हरेक रचनाकार का अपना अलग अंदाज़ होता है। एक ग़ज़लकार की ख़ास शैली ही उसे वैशिष्ट्य प्रदान करती है। शैदी साहेब की ग़ज़लों में उनका एक ख़ास अंदाज़ देखने लायक है...

“पैराहने-गुल पाया है खुशबू ने चमन में  
अब इससे हसीं कोई कवा हो नहीं सकती।”

“जन्नत से सिवा भी है जगह, देखले वाइज़,  
मयखाने को जाता हूँ, चला आ मेरे पीछे।”

और ख़ास तौर पर यह अन्दाज़ भी -

“तेरे बगैर ये दिल बेकरार रहता है,  
पर, ऐसा भी है नहीं, तेरा इन्तज़ार भी हो।”

अक्सर यह कहा जाता है कि कविता में, ख़ास तौर पर ग़ज़ल में, बात एक इशारे से कही जाये तो बात बनती है, यानी, शाइर अपनी बात को न कहकर भी कह दे। मगर, एक सुदीर्घ साधना के पश्चात ही किसी शाइर को यह फ़न नसीब होता है। वर्मा जी अपनी बात कहने के लिए इस तरीके का प्रयोग बखूबी करते हुए नज़र आते हैं।

“अब फिर से जवाँ होते हैं अरमाँ मेरे दिल में,  
जो उठ भी न पाते थे, वो बीमार खड़े हैं।”

“क्या मर के बदल जाते हैं दस्तूर अदब के?  
मैं लेटा हुआ हूँ मेरे सरकार खड़े हैं।”

किसी शाइर को बरसों की मेहनत, लगन और निष्ठा से ही मयस्सर होता है अपनी बात को शब्दों में पिरोकर कहने का करामाती जादू या एक ख़ास लहजा। कालान्तर में यही लहजा शाइर की पहचान बन जाता है।

“वो दौर भी क्या था कि जो गुज़रा मेरे पीछे  
लैला मेरे आगे थी, जुलैखा मेरे पीछे।”

“मफ़हूम ने कुछ और ही दुस़अत तलाश ली,  
अश्कों ने चन्द हरुफ़ जो ख़त में मिटा दिये।”

“तेरा मिज़ाज तो अनपढ़ के हाथ का ख़त है,  
नज़र तो आता है- मतलब कहाँ निकलता है?”

अब रूमानी होने का यह अर्थ कदापि नहीं कि साहित्यकार अपने देश-काल या अपनी निजता के प्रति उदासीन हो जाये! आने वाली पीढ़ी को ताकीद करते हुए शाइर कहता है...

“बच्चो! वतन की आवरु रखना स़ंभाल के,  
यह अपनी मिल्कियत है, किराये का घर नहीं।”

शब्दों को इस्तेमाल करने का तरीक़ा ही किसी शाइर को एक ख़ास पहचान दिलाता है -

“तुम्हारी बात का कैसे हो ऐताबार बहुत?  
क़रार करके भी करते हो बेक़रार बहुत !”

बात कहने के ख़ास अंदाज़ में अगर सादगी भी हो तो सोने में सुहागा !

“आओ गुज़रे ज़माने की बातें करें  
बारिशों में नहाने की बातें करें !”

“आओ बातें करें उस ज़माने की अब,  
उम्रे-गुस्ताख़ की, जो न आने की अब !”

ब्रज किशोर वर्मा ‘शैदी’ का शाइर कहीं-कहीं प्रवचन की मुद्रा में भी नज़र आता है। यह उनकी खूबी है या कमी इस झमेले में न पड़ते हुए यह शेर देखें -

“इस शहरे-बदकलाम से बच्चों को बचाना  
उन पर कहीं पड़ जाये न गुफ्तार का साया !”

“हवा के रुख़ पे भी रखिये निगाहें  
दिये को गर जलाना चाहते हैं।”

‘शैदी’ साहेब संवेदनशील हैं, इसीलिये शाइर हैं। कोई भी शाइर अपने परिवेश के प्रति उदासीन तो हो ही नहीं सकता। वह अपने समाज के दर्द को न केवल महसूस करता है अपितु अपनी शायरी में उस दर्द को ज़बान भी देता है...

“ले जायेगा यूँ ही कोई हाथों से पकड़कर  
मुफ़्लिस है वो डोली में विदा हो नहीं सकती !”

“फुटपाथ पे सोते हैं सभी लोग यहाँ पर,  
ये बे-दरो-दीवार मकानों का नगर है।”

काव्य के दो पहलू बहुत ख़ास और ज़रूरी माने जाते हैं- भाव पक्ष और कला पक्ष।

“बेखुदी और हुश्यारी  
सादगी और पुरकारी !”

जी हाँ! यही पुरकारी यानी उनकी शाइरी का कलापक्ष बहुत चमत्कारिक रूप में हमारे सामने आता है जब उनकी ग़ज़ल में रदीफ़ का यह अंदाज़ हमें देखने को मिलता है। इस प्रकार रदीफ़ का निर्वाह विरल होने के साथ-साथ दुरुह भी है।

“हम प्रेम के फन्दे में गिरफ्तार हैं किन के? इनके।  
तेवर भी हर इक बात में दमदार हैं किनके? इनके।।”

“हँस-हँस के उतर जाते हैं ये सबके दिलों में  
मीठे हैं मगर तेज़ ये हथियार हैं किनके? इनके।”

अपनी बात को इस तरह कहना कि वह सूत्र होकर पाठकों की जुबान पर चढ़ जाये, एक सिद्धहस्त शाइर ही यह करिश्मा कर सकता है।

“करते हो अहतराम तो पाओगे सिला भी  
वेसूद बुजुर्गों की दुआ हो नहीं सकती।”

कैफ़ भोपाली साहेब का एक बहुत ही प्रसिद्ध शेर है -

“कौन आयेगा यहाँ? कोई न आया होगा,  
मेरा दरवाज़ा हवाओं ने हिलाया होगा।”

एक समय में रचनाकारों की रचनाओं में भाव-साम्य हो जाना आम बात है, लेकिन ‘शैदी’ साहेब के जिस शेर का ज़िक्र मैं यहाँ करने जा रहा हूँ उसको सरसरी तौर पर देखने में लगेगा कि कैफ़ी साहेब के शेर का मफ़्हूम ही इसमें अंतर्निहित है, लेकिन ऐसा है नहीं। इसका तग़ज़ुल, इसका मफ़्हूम और अंदाज़ विल्कुल अलग है और यह खास अंदाज़ ‘शैदी’ साहेब का है- उनका ही हो सकता है।

“दरवाज़ा हिला, धड़का है दिल, खुशबू उड़ी है,  
आया है कोई, सिर्फ़ हवा हो नहीं सकती।”

और एक दिलकश अंदाज़ यह भी...

“वो होते जो दर पर तो मेरा दिल भी धड़कता  
दस्तक है फ़क़त, उनकी सदा हो नहीं सकती।”

श्री ब्रज किशोर वर्मा ‘शैदी’ की इन ग़ज़लों में अरबी-फारसी के शब्दों और इज़ाफ़तों का बाहुल्य होने के बावजूद उनकी भाषा ‘हिन्दुस्तानी’ ही कहलायेगी और अंदाज़ तो उनका अपना है ही! मुझे यक़ीन है कि उनकी ग़ज़लें पाठकों के दिलों में अपनी ख़ास जगह बनाने में कामयाब होंगी और साहित्यिक जगत् में अपना लोहा मनवायेंगी। मेरी शुभकामनायें तो उनके साथ रहेंगी ही।

- विज्ञान ब्रत

एन-138, सैक्टर-25,  
नोएडा-201301  
मो. : 9810224571

## प्यास का दरिया

“चुग्ली खाये रोशनदान” के बाद यह मेरी ग़ज़लों का द्वितीय स्वतंत्र संग्रह है। इसका शीर्षक “प्यास का दरिया” मैंने कुछ सोच कर ही रखा है। जीवन स्वयं में एक प्यास है। अतृप्ति से तृप्ति की ओर निरंतर प्रयासरत रहने का नाम ही जीवन है। जिजीविषा सतत कर्मरत रहने की प्रेरणा देती है। यही गीता के कर्मयोग का भी सार है। प्यास क़तरा-क़तरा भी हो सकती है और एक दरिया के समान असीम भी, जिसमें लालसा की तरंगें निरंतर गतिमान रहती हैं, जैसा कि जिगर मुरादाबादी ने मुहब्बत के बारे में कहा है :

“इक लफ़्ज़े-मोहब्बत का, अदना ये फ़साना है।

सिमटे तो दिले-आशिक़, फैले तो ज़माना है।।”

सराब, अर्थात्, मृगतृष्णा भी प्यास का दरिया ही है। भले ही वह भरम या छलावा हो, लेकिन, प्यास का साकार स्वरूप है। प्यास प्रेरित करती है जल के स्रोत तक पहुँचने के लिए। प्यास के दरिया की एक खूबी यह भी है कि वह खारे समुद्र की तरफ़ नहीं जाता, बल्कि, मीठे पानी के कुएँ की तलाश में रहता है। यही जीवन की नेक डगर का प्रतीक है। इस संग्रह की ग़ज़लों में प्यास का यही दरिया भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतिविवित है। यह प्यास ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने की हो सकती है तो महबूब की मुहब्बत की भी; मंज़िल की ओर बढ़ते सफ़र को गतिमान बनाये रखने की चाह के रूप में हो सकती है तो जीवन को समाज में उद्देश्यपूर्ण बनाने की आवश्यकता भी बन सकती है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

ईश्वरीय कृपा प्राप्त करने की तलब उसकी ओर मुखातिब कर देती है :

साकी! तेरी रहमत के तलबगार खड़े हैं।

मयखाने का दर खोल दे, मयखार खड़े हैं।।

फैज़ो-करम में साकिया! तेरे, कमी न हो।

ख्वाहिश यही है, खत्म मेरी तिश्नगी न हो।।

महबूब के दीदार की, उसके विसाल की ख़्वाहिश और प्रेम का नशा एक कभी  
न ख़त्म होने वाली प्यास ही तो है :

वो मुझपे छाया रहा उम्र-भर नशा बन कर,  
मैं एक रिन्द था और वो शराब-जैसा था ।

xxx

हमारे साथ मुसलसल ख़्याले-यार चले ।  
शबे-विसाल तसव्वुर में ही गुज़ार चले ॥

xxx

इक उम्र हुई, फिर भी दरीचा न खुला वो,  
हम दिल में लिये ख़्वाहिशे-दीदार खड़े हैं ।

xxx

उसको पाने की है उम्मीद, वो झूठी ही सही,  
कुछ तो हाथों की लकीरों का लिखा वाक़ी है ।

xxx

कुछ कहो तुम, कुछ सुनें हम, दिल की बात,  
दिल की बातों से कहाँ भरता है दिल??

xxx

लगे क्यों उससे मिल कर भी, कि जैसे  
कोई दरिया से प्यासा जा रहा है ।

जीवन में मंज़िल की तलाश और उसके लिये मुसलसल सफर की मुश्किलें  
और भटकाव प्यास के दरिया के मुख्तलिफ़ पड़ाव ही तो हैं :

तेरी ख़ातिर मैं बहुत भटका सुकूने-मंज़िल,  
राह निकली भी तो सहरा से गुज़र कर मेरी ।

xxx

मेरी प्यासों के सहरा तो इधर हैं,  
मगर, दरिया किधर को जा रहा है?

मुश्किलों के बाद भी सफर जारी रखने की इच्छा का नाम ही तो जिजीविषा  
है :

नातवानी ने पाँवों को जकड़ा तो क्या?  
दिल में “शैदी” सफर की तमन्ना तो है ।

जीवन में अपने कार्यों तथा व्यवहार की प्रशंसा पाने की इच्छा किसकी नहीं होती? लेकिन, कभी-कभी यह भी एक अधूरी प्यास बनकर ही रह जाती है :

मद्दाहे-रंगो-बू न हमें आज तक मिला,  
जंगल में खिल रहे हैं, कोई दीदावर नहीं।

यही अनबुझ प्यास जिजीविषा की ओर ले जाती है, जो जीवन को सँवारने का संकल्प लेती है :

बुरा है हाल बज्मे-जिन्दगी का,  
इसे फिर से सजाना चाहते हैं।

पाठक आगे स्वयं इन ग़ज़लों के अलग-अलग स्वाद का आनन्द लें। यदि आपको इसमें स्वानुभूति अथवा सार्वभौमता का आभास होता है तो यही इन ग़ज़लों की प्रामाणिकता का सबूत होगा। इस संग्रह की भूमिका प्रख्यात ग़ज़लकार, दोहाकार व चित्रकार श्री विज्ञान ब्रत ने लिखी है।

श्री विज्ञान ब्रत को छोटी बहर की ग़ज़लों का बादशाह कहा जाता है, जो एक निर्विवाद सत्य है। चित्रकला के क्षेत्र में भी उनका विशिष्ट स्थान है। उनके चित्रों में काव्य का लालित्य नज़र आता है तो ग़ज़लों में चित्रकारी जैसा मनमोहक सौन्दर्य। ऐसे महान, गुणी व समर्थ रचनाकार को मेरे इस संग्रह की ग़ज़लों में कुछ उल्लेखनीय नज़र आ गया, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। वह आयु में मुझसे छोटे हैं और सुसंस्कारवश मुझे यथोचित सम्मान भी देते हैं, इसलिये आशंका होती है कि काश! उनकी यह प्रशंसा महज़ दिलजोई न हो। यदि ऐसा नहीं है तो इतनी सुन्दर और उत्साहवर्धक भूमिका के लिये मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। सूने माथे पर चन्दन का टीका लग जाये तो मांगलिक होने के साथ-साथ सुशोभित भी करता है।

मैं मश्कूर हूँ उस्ताद शायर जनाब 'परवाज़' साहब का, जो उन्होंने इन ग़ज़लों पर न केवल अपनी नज़रे-दानिश अता फर्माई, बल्कि मुझे अपने तज़्अस्सुरात और दुआओं से भी नवाज़ा। उनकी भूमिका के लिए मैं उनका तहे-दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

अंत में, मेरा आभार "अनुभव प्रकाशन" के चि. पराग कौशिक के प्रति भी, जिनके सहयोग से यह पुस्तक इतने सुन्दर रूपाकार में प्रस्तुत हो सकी।

- बी.के. वर्मा "शैदी"

यादों में आता कौन है? : 17	55 : महवे-जुस्तजू होता हूँ मैं
तेरी कोई जुस्तजू नहीं : 18	56 : बस्ती नहीं है
अन्दर बोलता है : 20	57 : किस तरह सफीनों को
यूँ तो सरासर बहार में : 22	58 : आई, जुबाँ पर मेरी
वफ़ा हो नहीं सकती : 24	59 : ज़रूरत से कम नहीं
अदा हो नहीं सकती : 26	60 : ख़्याले-यार चले
जो गुज़रा मेरे पीछे : 28	61 : ग़म वेहिसाब दे
कोई चलता मेरे पीछे : 29	62 : जश्न खिल्अतपोशी का?
रस्ता मेरे पीछे : 30	63 : सजाने भी दीजिये
तो दुनिया मेरे पीछे : 31	64 : उम्रे-तमाम तक
बहू-बेटियाँ : 32	65 : उभरती है गले से
जहाँ लड़कियाँ : 34	66 : तेरे, कमी न हो
तलबगार खड़े हैं : 35	67 : सनम! बार-बार हम
ऐसे कलन्दर : 36	68 : अगर सुनते
लाया है गया फ़न : 37	69 : मग़रूर हो गया
है तकरार ज़ियादः : 38	70 : उसी दिल की तरफ़ हूँ
ख़वर होती है : 39	71 : हद में है
गुलिस्ताँ के हाल को : 40	72 : करके देखिये
हम यूँ भुला दिये : 41	73 : न कम करने वाले
बात उड़ाया न करो : 42	74 : वो मेरा रहा है
बहार अब के गई है : 43	75 : खुश्क-सी हँसी बन कर
हैं किनके? इनके : 44	76 : आँसुओं के सहारे
फ़लक है न ज़मीं है : 45	77 : मैं बेवफ़ा बन गया
तोल रहा है : 46	78 : बादे-सबा में सिहरन है
खुदा खैर करे : 47	79 : ग़म की भीड़ के रेले में
गुनहगार कहा जाता है? : 48	80 : मुसलसल ही रहता तो है
कहा जाता है : 49	81 : उनका नाम पसन्द
नहीं डरता है दिल : 50	82 : जिस्म सँवर जायेगा
कुद्रती सिंगार पर : 51	83 : ऐतवार भी हो
ज़माने की बातें करें : 52	84 : जलते घरों से
लिक्खे हुए तक़दीर में : 53	85 : दर्द के पहलू नहीं रहे
हस्ती गुज़ार के : 54	86 : है दिलदार का साया

प्यार का साया : 87	105 : ख्याब जैसा था
कलियों में अदा बाकी है : 88	106 : उस ज़माने की अब
ये सदियों का नगर है : 90	107 : न मौसम रहे
वो सितमगर नहीं होते : 92	108 : खुद ही जलता है
हिसाब, तेरी बेवफाई का? : 94	109 : नशा हो जाये
दिल के अन्दर हो गया : 96	110 : रहगुज़र के साथ
आज़माना चाहते हैं : 97	111 : समुन्दर की तोड़ डाली हैं
हैं खार बहुत : 98	112 : उन्हें कुछ खबर नहीं
कैसे हो ऐतबार बहुत? : 100	113 : मेरी रहगुज़र नहीं
जिसकी हमदम, नींद : 102	114 : किसी को ख़बर नहीं
खुशबुओं के साथ : 103	
रस्ते लम्हे-भर में : 104	116 : नज़ारों के दर्मियाँ

•••

(1)

रात-दिन यादों में आता कौन है?  
अपनी जानिब<sup>1</sup> यह बुलाता कौन है??

मस्त हूँ हरदम मैं उसकी तान पर,  
साज़, क्या जाने, बजाता कौन है?

नाचने में ही फ़क़त मश्गूल<sup>2</sup> हूँ,  
क्या पता, मुझको नचाता कौन है??

हो गया माहिर कई खेलों में अब,  
खेल ये, आखिर, सिखाता कौन है?

कम नहीं रौनक<sup>3</sup>, अज़ल<sup>4</sup> से आज तक,  
अंजुमन<sup>4</sup> ऐसी सजाता कौन है??

कितने सैयारे<sup>5</sup> ख़ला<sup>6</sup> में घूमते,  
इन पतंगों को उड़ाता कौन है?

नाम तो “शैदी” का होता है, मगर,  
उससे ये ग़ज़लें लिखाता कौन है??

1. तरफ, 2. व्यस्त, 3. सृष्टि का प्रारंभ, 4. महफिल, 5. ग्रह-उपग्रह, 6. अंतरिक्ष

अपनी नज़र को तेरी कोई जुस्तजू<sup>1</sup> नहीं।  
वो कौन-सी जगह है, जहाँ पर कि तू नहीं॥

सब में ही देखता हूँ तेरा शिर्कते-वुजूद<sup>2</sup>,  
तेरे जहाँ में कोई भी अपना उदू<sup>3</sup> नहीं।

जाऊँ मैं किसके दर<sup>4</sup> पे, तेरे दर को छोड़ कर,  
तुझ-सा करमनवाज़<sup>5</sup> कोई चार-सू नहीं॥

तेरे सहारे छोड़ दिया अपने आप को,  
पा कर तुझे अब और कोई आरजू<sup>6</sup> नहीं।

करता हूँ मैं नदामते-इस्याँ<sup>7</sup> से दिल को पाक<sup>8</sup>,  
अपनी नमाज़े-इश्क<sup>9</sup> में कैदे-वुजू<sup>10</sup> नहीं॥

बन के बहार गुलशने-हस्ती<sup>11</sup> में आ कभी,  
तेरे बगैर ज़िन्दगी में रंगो-बू नहीं।

बेड़ा लगा दे पार गुनाहे-अज़ीम<sup>12</sup> का,  
तेरी तरह करम<sup>13</sup> की, किसी में भी खूँ<sup>14</sup> नहीं॥

दिल की हर एक बात सुने जा रहा है तू,  
ज़ाहिर में तुझसे अपनी कोई गुफ्तगू<sup>15</sup> नहीं।

है इंतज़ारे-हश्र<sup>16</sup>, मुकाबिल<sup>17</sup> जब होगा तू,  
है अब भी यूँ तो दिल में, मगर रू-ब-रू<sup>18</sup> नहीं।

मंज़िल पे आ गया है मेरा कारवाने-इश्क<sup>19</sup>  
ये वो मकाम<sup>20</sup> है कि जहाँ मैं-ओ-तू नहीं।

“शैदी” शराबखाना-ए-वहदत<sup>21</sup> अजीब है,  
साक़ी-ओ-मय<sup>22</sup> नहीं, वहाँ जामो-सुबू<sup>23</sup> नहीं ॥

1. तलाश, 2. अस्तित्व में शामिल, 3. शत्रु, 4. ढार, 5. कृपालु, 6. इच्छा, 7. पापों का पश्चाताप, 8. पवित्र, 9. प्रेम की नमाज़, 10. नमाज़ से पहले हाथ धोने की पाबन्दी, 11. जीवन-वाटिका, 12. महा पाप, 13. कृपा, 14. आदत, 15. बातचीत, 16. प्रलय की प्रतीक्षा, 17. सम्मुख, 18. आमने सामने, 19. प्रेम का कारवाँ, 20. पड़ाव, 21. अद्वैत भाव का मदिरालय, 22. साक़ी और शराब, 23. मदिरा-पात्र

जुबाँ को रख के अन्दर बोलता है।  
वो चुप रह कर भी अक्सर बोलता है॥

नई साज़िश<sup>1</sup> है या तब्दीलिए-दिल<sup>2</sup>,  
मेरा दुश्मन अब हँस कर बोलता है।

भले ही चुप हूँ मैं दुश्मन के आगे,  
मगर हाथों का पत्थर बोलता है॥

यही अहसासे-दिल होता है अक्सर,  
कोई है जो कि अन्दर बोलता है।

मुहब्बत से इसे मैंने तराशा,  
तभी तो बुत<sup>3</sup> का पत्थर बोलता है॥

तड़प उठता है दिल तो क्या तअज्जुब<sup>4</sup>?  
सरे-तूफाँ<sup>5</sup>, समुन्दर बोलता है।

मेरी रिन्दी<sup>6</sup> यगाना<sup>7</sup>, मैकदे<sup>8</sup> में,  
मेरे हाथों में सागर<sup>9</sup> बोलता है॥

बुझा ले तिश्नगी<sup>10</sup>, ऐ रुहे-तिश्ना<sup>11</sup>!  
जिनाँ<sup>12</sup> में आवे-कौसर<sup>13</sup> बोलता है।

नहीं अल्फाज़<sup>14</sup> का मोहताज जज्बा,  
कि, चुप रह कर भी शायर बोलता है॥

नसीहत क्या करें तहज़ीबे-नौ<sup>15</sup> को?  
कि, बेटा भी पलट कर बोलता है।

किसी से पूछने की क्या ज़रूरत?  
है क्या माहौल<sup>16</sup>, खुद घर बोलता है ॥

नगर में कौन पहचाने मकीं<sup>17</sup> को?  
मकाँ का सिर्फ़ नम्बर बोलता है ।

बयाँ की क्या ग्रज़<sup>18</sup> हुस्ने-चमन<sup>19</sup> को?  
खुद अपने आप, मंज़र<sup>20</sup> बोलता है ॥

शबे-फुर्कत<sup>21</sup> का “शैदी” पूछना क्या?  
कटी कैसे? ये विस्तर बोलता है ।

1. षड्यंत्र, 2. हृदय-परिवर्तन, 3. मूर्ति, 4. आश्चर्य, 5. तूफान में, 6. मदिरा-पान,
7. अनुपम, 8. मदिरालय, 9. मदिरा-पात्र, 10. प्यास, 11. प्यासी आत्मा, 12. स्वर्ग,
13. स्वर्ग की नदी का जल, 14. शब्द, 15. नई सभ्यता, 16. वातावरण, 17. निवासी,
18. आवश्यकता, 19. उपवन का सौन्दर्य, 20. दृश्य, 21. वियोग रात्रि

गुल<sup>1</sup> खिल रहे हैं यूँ तो सरासर बहार में।  
पहले-से रंगो-बू<sup>2</sup> हैं कहाँ, पर, बहार में।

गुलहाए-ज़ख्मे-दिल<sup>3</sup> कि जो अफ़सुर्दा<sup>4</sup> थे हनोज़<sup>5</sup>,  
तकलीफ़ दे रहे हैं वो खिल कर बहार में।

आतिशनवा<sup>6</sup> हैं बुलबुलें, गुंचे<sup>7</sup> शररफ़िशाँ<sup>8</sup>,  
पेशे-नज़र<sup>9</sup> है आलमे-महशर<sup>10</sup> बहार में॥

है आखिरश<sup>11</sup> नसीब<sup>12</sup> में तुझसे ही वास्ता,  
तू भी लगा दे, ऐ खिज़ा<sup>13</sup> विस्तर बहार में।

अहले-चमन<sup>14</sup> ख़फ़ा हैं, नशेमन<sup>15</sup> भी जल गया,  
अब क्या करेंगे हम भला जी कर बहार में॥

आये क़फ़स<sup>16</sup> को तोड़ तो घर अपना खाक था,  
अपना भी देखे कोई मुकद्दर बहार में।

जब गुंचे खिल रहे थे, फ़सुर्दा<sup>17</sup> थे चन्द<sup>18</sup> गुल,  
देखा है हमने ऐसा भी अक्सर बहार में॥

हम आज्मा चुके हैं हर इक शाखे-गुलसिताँ,  
फिरते हैं आज फिर भी यूँ बेघर बहार में।

जिस गुल पे की नज़र, वही गुलचीं<sup>19</sup> ने चुन लिया,  
हर बार रह गये हैं तड़प कर बहार में ॥

“शैदी” निज़ामे-महफिले-साक़ी<sup>20</sup> तो देखिये,  
खाली पड़े हैं मीना-ओ-साग़र<sup>21</sup> बहार में ।

1. फूल, 2. रंग और गंध, 3. दिल के घावों के फूल, 4. मुझाये हुए, 5. अभी तक,
6. आग्नेय बोली बोलने वाली, 7. कलियाँ, 8. चिनगारियाँ फैलाने वाली, 9. दृष्टि के सामने,
10. प्रलय का दृश्य, 11. अन्ततः, 12. भाग्य, 13. पतझड़, 14. बाग़ वाले, 15. घोंसला,
16. पिंजड़ा, 17. मुझाये हुए, 18. कुछ, 19. फूल चुनने वाला, 20. साक़ी की महफिल की  
व्यवस्था, 21. मदिरा-पात्र

हर शख्स<sup>1</sup> से उमीदे-वफ़ा<sup>2</sup> हो नहीं सकती ।  
यह रस्म सभी से तो अदा हो नहीं सकती ॥

कह दो ये अमीरों से, खुलूस<sup>3</sup> और वफ़ा की,  
कीमत कभी सिक्कों से अदा हो नहीं सकती ।

इस जुर्मे-मुहब्बत<sup>4</sup> में मेरे साथ हैं वो भी,  
इक हाथ से ताली की सदा<sup>5</sup> हो नहीं सकती ॥

लो! मैंने ख़्यालों में उसे कैद किया है,  
उस शोख<sup>6</sup> की कुछ और सज़ा हो नहीं सकती ।

पैराहने-गुल<sup>7</sup> पाया है खुशबू ने चमन में,  
अब इससे हसीं कोई कबा<sup>8</sup> हो नहीं सकती ॥

हासिल है जिसे तेरा करम<sup>9</sup>, तेरी नवाज़िश<sup>10</sup>,  
तक़दीर भी अब उससे ख़फ़ा<sup>11</sup> हो नहीं सकती ।

पाकीज़ा<sup>12</sup> ख़्यालों में ज़ेहन<sup>13</sup> झूबा हुआ है,  
सज्दे में नमाज़ी से ख़ता हो नहीं सकती ॥

ऐ दोस्त! हम उस बात के कायल ही नहीं हैं,  
जो बात सलीके<sup>14</sup> से अदा हो नहीं सकती ।

हस्ती<sup>15</sup> है उसूलों पे टिकी, छोड़ दूँ कैसे?  
बुनियाद इमारत से जुदा हो नहीं सकती ॥

करते हो अहतराम<sup>16</sup> तो पाओगे सिला<sup>17</sup> भी  
बेसूद<sup>18</sup>, बुजुर्गों की दुआ हो नहीं सकती ।

बेहतर हो मेरी ज़ीस्त<sup>19</sup>, ये चाहा तो बहुत, पर  
हालात<sup>20</sup> ने अक्सर ये कहा, हो नहीं सकती ॥

औरों के दिये जिसने बुझाये हों हमेशा,  
खुद उसके चिरागों में ज़िया<sup>21</sup> हो नहीं सकती ।

तू चोंच से विखरा दे कफ़स<sup>22</sup> की ये तीलियाँ,  
ये किसने कहा है कि रिहा<sup>23</sup> हो नहीं सकती ।

सीमेंट के जंगल जहाँ, तेज़ाव की नदियाँ,  
रुहअफ़ज़ा<sup>24</sup> वहाँ आबो-हवा हो नहीं सकती ।

पिघलेगा तो हर शक्ल में ढल जायेगा “शैदी” ।  
पथर में ये शीशों की अदा हो नहीं सकती ॥

1. व्यक्ति, 2. वफादारी की आशा, 3. निश्छलता, 4. प्रेम का अपराध, 5. आवाज़,
6. चंचल, 7. फूल की पोशाक, 8. पोशाक, 9. कृपा, 10. कृपा, 11. रुष्ट, 12. पवित्र,
13. मस्तिष्क, 14. शिष्टता, 15. जीवन, 16. सम्मान, 17. पुरस्कार, 18. निरर्थक,
19. जीवन, 20. परिस्थितियाँ, 21. चमक, 22. पिंजड़ा, 23. स्वतंत्र, 24. प्राणवर्द्धक

नफरत में मुहब्बत की अदा हो नहीं सकती ।  
जिस हाथ में खंजर हो, हिना हो नहीं सकती ॥

ले जायेगा यूँ ही कोई, हाथों से पकड़ कर,  
मुफ़्लिस<sup>1</sup> है वो, डोली में विदा हो नहीं सकती ।

गुल<sup>2</sup> ही हैं जो हँस लेते हैं काँटों में भी रह कर,  
काँटों में तबस्सुम<sup>3</sup> की अदा हो नहीं सकती ॥

बू<sup>4</sup> जलते नशेमन<sup>5</sup> की हैं क्यूँ बादे-सबा<sup>6</sup> में?  
यह मेरे गुलिस्ताँ<sup>7</sup> की हवा हो नहीं सकती ।

ऐ मौत! सुकूँ<sup>8</sup> बख़ा दे बीमारे-अलम<sup>9</sup> को,  
अब इससे सिवा<sup>10</sup> कोई दुआ हो नहीं सकती ॥

ऐ दोस्त मेरे! हक़ है तुझे तर्के-वफ़ा<sup>11</sup> का,  
पर, मुझसे तो अपनों से दग्जा<sup>12</sup> हो नहीं सकती ।

सूरत से तो लगता है कि मूरत है वफ़ा की,  
सीरत<sup>13</sup> है कि पाबंदे-वफ़ा हो नहीं सकती ॥

दावा-ए-मुहब्बत<sup>14</sup> तो उन्हें खूब है, लेकिन,  
ये क्या कि अदा रस्मे-वफ़ा हो नहीं सकती ।

दिल है कि समझ लेता है हर वक्त बखूबी<sup>15</sup>,  
वो बात, जुबाँ से जो अदा हो नहीं सकती ॥

दरवाज़ा हिला, धड़का है दिल, खुशबू उड़ी है,  
आया है कोई, सिफ़ विदा हो नहीं सकती ।

वो होते जो दर पर तो मेरा दिल भी धड़कता,  
दस्तक है फ़्लॉट<sup>16</sup>, उनकी सदा<sup>17</sup> हो नहीं सकती ॥

1. निर्धन, 2. फूल, 3. मुस्कुराहट, 4. दुर्गन्ध, 5. घोंसला, 6. सुबह की हवा, 7. उपवन,
8. शान्ति, 9. दुख का रोगी, 10. अधिक, 11. वफादारी का त्याग, 12. धोखा, 13. स्वभाव,
14. प्रेम का दावा, 15. भलीभांति, 16. केवल, 17. आवाज़

वो दौर<sup>1</sup> भी क्या था कि जो गुज़रा मेरे पीछे ।  
लैला मेरे आगे थी, जुलेख़ा मेरे पीछे ॥

आये तो कोई सामने मैदाने-वफ़ा में,  
करता है, करे शौक से दावा, मेरे पीछे ।

ऐ अहले-खिरद<sup>2</sup> ! दूँढ़ लो खुद राहे-मुहब्बत<sup>3</sup>,  
आना ही पड़ेगा तुम्हें, वर्ना, मेरे पीछे ॥

कद साया-ए-अहसास<sup>4</sup> का बढ़ जाता है कुछ और  
होता जो नुमायाँ<sup>5</sup> तेरा जल्वा<sup>6</sup> मेरे पीछे ।

महफ़िल में जिसे दोस्त समझते हैं मेरा सब,  
खंजर वो लिये हाथ में बैठा मेरे पीछे ॥

यादें ही फ़क़त<sup>7</sup> अब तो बचीं साक़ी-ओ-मै<sup>8</sup> की,  
मयख़ाना बहुत दूर है छूटा मेरे पीछे ॥

1. समय, 2. बुद्धिमान लोग, 3. प्रेम-मार्ग, 4. अनुभूति की छाया, 5. प्रकट, 6. सौंदर्य,
7. केवल, 8. साक़ी और मदिरा

दीखे न, मगर, है कोई चलता मेरे पीछे ।  
हूँ दश्त<sup>1</sup> में और खिज्ज़<sup>2</sup> है गोया<sup>3</sup> मेरे पीछे ॥

आफ़ात<sup>4</sup> फ़क़त<sup>5</sup> साथ रहें, अपने सफ़र में,  
है दश्त मेरे आगे तो सहरा<sup>6</sup> मेरे पीछे ॥

हमराह<sup>7</sup> जहाँ तुम थे, वही राहे-सफ़र<sup>8</sup> अब,  
तन्हा<sup>9</sup> ही मेरे आगे है, तन्हा मेरे पीछे ॥

छालों से, पसीने से भी, मंज़िल पे पहुँच कर,  
आता है सफ़र याद, जो छूटा मेरे पीछे ।

नाकामी-ए-ऐज़ाज़े-हुनर<sup>10</sup> देख के अपनी,  
रोयेगा बहुत खुद पे मसीहा<sup>11</sup>, मेरे पीछे ॥

आगे मेरी नज़रों के जला मेरा नशेमन<sup>12</sup>,  
ऐ काश! कि ये सानिहा<sup>13</sup> होता मेरे पीछे ।

है पुश्त<sup>14</sup> पे सूरज, ये गुमाँ<sup>15</sup> इसको है “शैदी”  
वर्ना ये मेरा साया भी, रहता मेरे पीछे ॥

1. जंगल, 2. भटके हुओं को राह दिखाने वाला देवता, 3. जैसे, 4. मुसीबतें, 5. केवल,
6. रेगिस्तान, 7. सहयात्री, 8. यात्रा-पथ, 9. एकांत, 10. कला के जादू की असफलता,
11. चिकित्सक, 12. घोंसला, 13. दुर्घटना, 14. पीठ, 15. भ्रम

क्या छूट गया गाँव का रस्ता मेरे पीछे।  
दुनिया ही गयी छूट है, गोया<sup>1</sup>, मेरे पीछे।

कुफ्र<sup>2</sup> और रहे-दीं<sup>3</sup> की अजब जंगे-मुसलसल<sup>4</sup>,  
उक्खाँ<sup>5</sup> मेरे आगे है तो दुनिया मेरे पीछे।

महफूज़<sup>6</sup> बलाओं से हूँ हर वक्त कि जैसे,  
साया किसी हमदर्द का रहता मेरे पीछे॥

इक दौर था, दुनिया का तलबगार<sup>7</sup> रहा मैं,  
इक वक्त है ये भी कि है दुनिया मेरे पीछे।

अब तक है ख़्यालों में वसी जिसकी तरावट,  
छूटा है बहुत दूर वो दरिया मेरे पीछे॥

है पासे-अदब<sup>8</sup>, वर्ना तो है मुझको ख़बर सब,  
कहता है मेरे आगे वो क्या, क्या मेरे पीछे।

दीवारे-रवायात<sup>9</sup> जो ख़स्ता-सी पड़ी है,  
क्या उसको बचा पायेगा बेटा, मेरे पीछे?

1. जैसे, 2. नास्तिकता, 3. धर्म-पथ, 4. निरंतर युद्ध, 5. परलोक, 6. सुरक्षित, 7. इच्छुक,
8. शिष्टता का लिहाज़, 9. परंपराओं की दीवार

है दस्ते-खुदा<sup>1</sup> सर पे तो दुनिया मेरे पीछे ।  
अब खौफ<sup>2</sup> हर इक फ़िक्र<sup>3</sup> का, छूटा मेरे पीछे ॥

सब साथ रहे सैरे-गुलिस्ताँ<sup>4</sup> में मुसलसल<sup>5</sup>,  
सहरा<sup>6</sup> में मगर कोई न आया मेरे पीछे ।

बच-बच के गुज़रने में कटी उम्र ये सारी,  
हर सिम्त<sup>7</sup> ही सैलाबे-बला<sup>8</sup> था मेरे पीछे ॥

निकलेगा बहुत दूर ही मुझसे वो यकीनन,  
इस वक्त सफ़र में है वो, माना, मेरे पीछे ।

मैं फ़र्ज़ निभाता हूँ इबादत<sup>9</sup> ही समझ कर,  
आ जायेगा खुद दौड़ के रुतबा<sup>10</sup> मेरे पीछे ॥

कुछ बात फ़साने में मेरे, सबसे जुदा थी,  
होती है सरे-बज्म<sup>11</sup> जो चर्चा मेरे पीछे ।

जन्नत से सिवा<sup>12</sup> भी है जगह, देख ले वाइज़<sup>13</sup> ।  
मयख़ाने<sup>14</sup> को जाता हूँ, चला आ मेरे पीछे ॥

1. ईश्वर का हाथ, 2. भय, 3. चिन्ता, 4. उपवन की सैर, 5. निरंतर, 6. रेगिस्तान,
7. ओर, 8. आफ़तों की बाढ़, 9. पूजा, 10. पदवी, 11. महफिल में, 12. अधिक,
13. उपदेशक, 14. मंदिरालय

आबरु-ए-नज़र<sup>1</sup> हैं बहू-बेटियाँ।  
रौनके-बामो-दर<sup>2</sup> हैं बहू-बेटियाँ॥

माँ की चुनरी भी, बाबुल की दस्तार<sup>3</sup> भी,  
ओढ़े अपने ही सर हैं, बहू-बेटियाँ।

है वकारे-गिरस्ती<sup>4</sup> शजर<sup>5</sup> की तरह,  
जिसके बर्गो-समर<sup>6</sup> हैं बहू-बेटियाँ॥

ज़िम्मेदारी से कोई नहीं है बरी<sup>7</sup>,  
गाँव में सबके घर हैं बहू-बेटियाँ।

कौन समझाए दंगा-परस्तों<sup>8</sup> को ये?  
उनकी भी दाँव पर हैं बहू-बेटियाँ॥

कौन उससे ज़ियादः धनी, जिसके घर  
बाअदब<sup>9</sup>, बाहुनर<sup>10</sup> हैं, बहू-बेटियाँ।

खानदानी रिवायत<sup>11</sup> है इक कारवाँ,  
मोतबर<sup>12</sup> हमसफर<sup>13</sup> हैं बहू-बेटियाँ॥

साथ चलने का मौका दो, तब देखना,  
राह में पेशतर<sup>14</sup> हैं बहू-बेटियाँ।

मोड़ इनके ही दम से हैं तारीख<sup>15</sup> में,  
नस्ल<sup>16</sup> की रहगुज़र<sup>17</sup> हैं बहू-बेटियाँ।

पूछते गाँव के सूने पनघट यही,  
क्यों न आतीं नजर हैं बहू-बेटियाँ।

1. आँख की इज्ज़त, 2. छत व द्वार की शोभा, 3. पिता की पगड़ी, 4. गृहस्थी की मर्यादा,
5. पेड़, 6. पत्ते और फल, 7. मुक्त, 8. उपद्रवी, 9. शिष्ट, 10. गुणी, 11. परम्परा,
12. विश्वसनीय, 13. सहयात्री, 14. आगे, 15. इतिहास, 16. वंश, 17. मार्ग

(12)

कल न दिखती थीं हमको जहाँ लड़कियाँ ।  
आज पहुँची हुई हैं, वहाँ लड़कियाँ ॥

विन्दियाँ, चूड़ियाँ, राखियाँ लड़कियाँ ।  
शोखियाँ, मस्तियाँ, कनखियाँ लड़कियाँ ॥

बाखबर<sup>1</sup> वक्त की नब्ज से हर घड़ी,  
हर ख़बर की बनीं सुर्खियाँ लड़कियाँ ।

घर की चौखट को, पनघट के धूंधट को तज,<sup>2</sup>  
आज पहुँचीं कहाँ से कहाँ लड़कियाँ ॥

रौनकें, रौनकें, रौनकें, रौनकें,  
घर के गुलशन की हैं तितलियाँ लड़कियाँ ।

ठेस लगते ही फौरन चटक जायेंगी,  
जैसे हों काँच की चूड़ियाँ लड़कियाँ ॥

अब अकेली न समझो सफ़र में इन्हें,  
बन रहीं आजकल कारवाँ लड़कियाँ ।

इनको अहसास<sup>3</sup> दस्तारों-चादर का है,  
घर की इज़्ज़त की हैं दास्ताँ लड़कियाँ ॥

दर्द “शैदी” समझते हैं सब आपका,  
उनके घर में भी तो हैं जवाँ लड़कियाँ ॥

1. परिचित, 2. त्याग कर, 3. ख़्याल, 4. पगड़ी

साकी! तेरी रहमत<sup>1</sup> के तलबगार<sup>2</sup> खड़े हैं।  
मयखाने<sup>3</sup> का दर<sup>4</sup> खोल दे, मैख्वार<sup>5</sup> खड़े हैं॥

अब फिर से जवाँ होते हैं अरमाँ मेरे दिल में,  
जो उठ भी न पाते थे, वो बीमार, खड़े हैं।

आसारे-मुहब्बत<sup>6</sup> हैं अभी दिल में सलामत,  
मिस्मार<sup>7</sup> इमारत हुई, मीनार खड़े हैं॥

इक उम्र हुई फिर भी दरीचा<sup>8</sup> न खुला वो,  
हम दिल में लिये ख़ाहिशे-दीदार<sup>9</sup>, खड़े हैं।

कैसा है अदावत<sup>10</sup> का ये दरिया यहाँ हायल<sup>11</sup>,  
इस पार खड़े हम हैं, वो उस पार खड़े हैं॥

क्या जानिये, किस शै<sup>12</sup> को नज़र ढूँढ़ रही है॥  
बाज़ार में कब से लिये दीनार<sup>13</sup>, खड़े हैं।

हैराँ हूँ कि कल तक रहे जिन हाथों में पत्थर,  
हाँ, आज वही हाथ, लिये हार, खड़े हैं॥

मातम पे मेरी मौत के, मज्मा<sup>14</sup> ही जुड़ा कब?  
दो-चार हैं बैठे हए, दो-चार खड़े हैं।

क्या मर के बदल जाते हैं दस्तूर<sup>15</sup> अदब<sup>16</sup> के?  
मैं लेटा हुआ हूँ, मेरे सरकार खड़े हैं॥

1. कृपा, 2. आकांक्षी, 3. मदिरालय, 4. द्वार, 5. मदिरा प्रेमी, 6. प्रेम के लक्षण, 7. ध्वस्त,
8. खिड़की, 9. दर्शन की अभिलाषा, 10. शत्रुता, 11. मध्यस्थ, 12. वस्तु, 13.एक प्रकार की मुद्रा, 14. भीड़, 15. नियम, 16. शिष्टता

हम ताज भी ठोकर में रखें, ऐसे कलन्दर<sup>1</sup>,  
एज़ाज़<sup>2</sup> के तालिब<sup>3</sup>, सरे-दरबार<sup>4</sup> खड़े हैं।

ऐ अज़मे-जवाँ<sup>5</sup>! तेरे हवाले है मुकद्दर,  
हम परचमे-हक<sup>6</sup> ले के, सरे-दार<sup>7</sup> खड़े हैं॥

सर अपना उठायेंगे तो सर ही न रहेगा,  
हाथों में लिये, इसलिये, दस्तार<sup>8</sup> खड़े हैं।

अब किसको वली<sup>9</sup> समझें ज़माने में भला हम?  
मज़हब<sup>10</sup> की रिदा<sup>11</sup> ओढ़े, गुनहगार खड़े हैं॥

ज़ज्बा<sup>12</sup> कहाँ जागा है, अभी फ़त्ह<sup>13</sup> का दिल में,  
हाथों में, भले ही, लिये तलवार, खड़े हैं।

वो कब का बुलन्दी<sup>14</sup> पे है आहिस्तारवी<sup>15</sup> से,  
मगरुर<sup>16</sup> कई साहिबे-रफ़तार<sup>17</sup>, खड़े हैं॥

मारूफ<sup>18</sup> कभी थे जो, सबब<sup>19</sup> ऐशो-तरब<sup>20</sup> के,  
ऐवान<sup>21</sup> वही बे-दरो-दीवार<sup>22</sup> खड़े हैं।

महफ़िल की निज़ामत<sup>23</sup> का ये अन्दाज़, कहें क्या?  
नाअहल<sup>24</sup> हैं मसनद पे, औ' हक़दार<sup>25</sup> खड़े हैं॥

आते हैं मेरे सामने जब भी ये ग़मो-रंज,  
लगता है, मेरे दोस्त, मेरे यार खड़े हैं।

1. मस्त फ़कीर, 2. सम्मान, 3. इच्छुक, 4. दरबार में, 5. युवा संकल्प, 6. सत्यता का झंडा,
7. फाँसी के फंदे पर, 8. पगड़ी, 9. महात्मा, 10. धर्म, 11. चादर, 12. भावना, 13. जीत,
14. ऊँचाई, 15. धीमी चाल, 16. घमंडी, 17. तीव्रगामी, 18. प्रसिद्ध, 19. कारण, 20. आमोद-प्रमोद, 21. महल, 22. द्वार-दीवार विहीन, 23. व्यवस्था, 24. अयोग्य, 25. सुपात्र

बाज़ार में आया है कि लाया है गया फ़न<sup>1</sup>,  
शहकार<sup>2</sup> लिये हाथ में, फ़नकार<sup>3</sup> खड़े हैं ॥

एज़ाज़<sup>4</sup> की चाँदी में चमक क्या है बला की,  
विकने के लिये कितने क़लमकार<sup>5</sup> खड़े हैं ।

मैदाने-मुहब्बत में है दम-ख़म ही कसौटी,  
बेदम<sup>6</sup> तो हैं बेदम ही, प<sup>7</sup> दमदार, खड़े हैं ॥

तूफ़ान ही तूफ़ान हैं कश्ती के सफ़र में,  
हम थाम के टूटी हुई पतवार, खड़े हैं ।

हैं इर्द-गिर्द शाह के, सारे ही तलबगार<sup>8</sup>,  
तन्हा<sup>9</sup> ही अलग सफ़<sup>10</sup> में ये खुददार<sup>11</sup> खड़े हैं ॥

उनको तो ख़बर ही नहीं, क्या खूब है वल्लाह ।  
हम जिनके लिये बन के गुनहगार<sup>12</sup> खड़े हैं ।

पेशानी<sup>13</sup> को है संगे-मलामत<sup>14</sup> की ज़रूरत,  
हाथों में लिये लोग, मगर, हार, खड़े हैं ॥

मक्ते<sup>15</sup> का शरफ़<sup>16</sup> बख्ता<sup>17</sup> दो “शैदी”, तो ग़ज़ल हो,  
इक सफ़<sup>18</sup> में किस अदब<sup>19</sup> से ये अशआर<sup>20</sup> खड़े हैं ।

1. कला, 2. सर्वथ्रेष्ठ रचना, 3. कलाकार, 4. सम्मान, 5. लेखक-कवि, 6. अशक्त, 7. पर,
8. आकांक्षी, 9. अकेले, 10. पंकित, 11. स्वाभिमानी, 12. अपराधी, 13. मस्तक, 14. निंदा-रूपी पत्थर, 15. ग़ज़ल का अंतिम शेर, 16. सम्मान, 17. प्रदान करना, 18. पंकित,
19. शिष्टतापूर्वक, 20. ग़ज़ल के शेर

अच्छी तो नहीं होती है तकरार<sup>1</sup> ज़ियादः।  
बात और बढ़ाओ नहीं बेकार ज़ियादः॥

मायूस<sup>2</sup> न यूँ वादा-शिकनी<sup>3</sup> पर थे कभी हम,  
वादे पे यकीं कर लिया इस बार ज़ियादः॥

होता है गुमाँ<sup>4</sup>, उसकी वफ़ा पर भी कभी अब,  
हो शै<sup>5</sup> कोई, अच्छी नहीं मिक़दार<sup>6</sup> ज़ियादः।

कुछ तिनके नशेमन के खिसकने-से लगे हैं,  
अब दिखने ख़िज़ाँ<sup>7</sup> के लगे आसार, ज़ियादः॥

सिखला ज़रा आदाब<sup>8</sup> भी कुछ उसको सफ़र के,  
बेकार है, दम-ख़म बिना, रफ़तार ज़ियादः।

भूलें न कहीं, लाड़ में, तहज़ीबो-अदब<sup>9</sup> को,  
बच्चों के लिये ठीक न पुचकार ज़ियादः।

कुछ लोगों से मिल कर ही सुकूँ<sup>10</sup> मिलता है दिल को,  
होती है दवा कोई असरदार ज़ियादः।

उसको था भरम खूब, मगर, बच न सका कुछ,  
टिकती न कभी रेत की दीवार, ज़ियादः॥

ज़हरीला भी हो वो, ये ज़रूरी तो नहीं है  
होती है किसी साँप की फुंकार ज़ियादः।

1. वाद-विवाद, 2. निराश, 3. प्रतिज्ञा-भंग, 4. संदेह, 5. वस्तु, 6. मात्रा, 7. पतझड़,
8. नियम, 9. शिष्टता, 10. शाँति

जाँनिसारों<sup>1</sup> को न फर्दा<sup>2</sup> की खबर होती है।  
जिन्दगी, मौत के साये में बसर<sup>3</sup> होती है॥

बाहुनर<sup>4</sup> होके भी, कायम न रहे जौके-हुनर<sup>5</sup>,  
सच तो ये है कि ये तौहीने-हुनर<sup>6</sup> होती है॥

एक-एक करके, सितारों को सुलाती है नसीम<sup>7</sup>,  
तब कहीं जाके नुमूदार<sup>8</sup> सहर<sup>9</sup> होती है।

इक्षिदा<sup>10</sup> जानिये अगली मुसाफ़रत<sup>11</sup> की उसे,  
राहे-उल्फ़त<sup>12</sup> में न तकमीले-सफ़र<sup>13</sup> होती है॥

वुसूअतें<sup>14</sup> उसकी समझ पायेंगे क्या, अहले-जहाँ<sup>15</sup>,  
जुस्तजू<sup>16</sup> जिसकी पसे-शम्सो-क़मर<sup>17</sup> होती है।

जिसके हाथों से उजड़ते हैं, उजालों के नगर,  
जिन्दगी उसकी अँधेरों में बसर होती है॥

दूँढ़ ही लेते हैं हर हाल में शिकार अपना,  
कुछ परिन्दों की बड़ी तेज नज़र होती है।

रोशनी प्यार की, ज़ालिम के दिले-मुज्जिलम<sup>18</sup> में,  
लोग कहते हैं, नहीं होती, मगर होती है।

हाथ, दस्ताने पहन कर, जो मिलायें “शैदी”,  
कब उन्हें गर्मी-ए-उल्फ़त<sup>19</sup> की खबर होती है?

1. प्राण न्यौछावर करने वाले, 2. भविष्य, 3. व्यतीत, 4. गुणवान, 5. कला के प्रति लगाव,
6. कला का अपमान, 7. धीमी हवा, 8. प्रकट, 9. सुबह, 10. प्रारंभ, 11. यात्रा,
12. प्रेम-पथ, 13. यात्रा-समाप्ति, 14. विस्तार, 15. दुनिया वाले, 16. तलाश,
17. सूर्य-चंद्रमा से भी आगे, 18. अंधकारपूर्ण हृदय, 19. प्रेम की गर्मी

मौसम ने ही विगाड़ा, गुलिस्ताँ के हाल को।  
इल्ज़ाम<sup>1</sup> दे रहे वो मेरी देखभाल को ॥

टिकती नहीं है कोई भी बेहतर, हसीनतर<sup>2</sup>,  
मायूस<sup>3</sup> कर दिया है तेरी हर मिसाल<sup>4</sup> को।

पहलू<sup>5</sup> नज़ाकतों के निकलते रहे तमाम,  
पहना सका न लफ़्ज़ का पैकर<sup>6</sup> ख़्याल<sup>7</sup> को ॥

भरमा रहा हूँ अपने तबस्सुम<sup>8</sup> से सभी को,  
पोशीदा<sup>9</sup> रख के दिल में ही अपने मलाल<sup>10</sup> को।

आकर ख़्याल में भी वो, लुत्फ़े-विसाल<sup>11</sup> दे,  
समझेंगे अहले-इश्क<sup>12</sup> ही ऐसे कमाल को ॥

लम्हों<sup>13</sup> की खुशनुमाई<sup>14</sup> के शैदाई<sup>15</sup> हम रहे,  
हमने तवज्ज्ञो<sup>16</sup> दी न कभी माहो-साल<sup>17</sup> को।

ताक़त है किसी और की, जिसका हुनर<sup>18</sup> है ये,  
हैरत<sup>19</sup> से तक<sup>20</sup> न गेंद की ऊँची उछाल को ॥

अब कर सकेगा खाक वो, दुश्मन का सर क़लम,  
थामे हुए है दोनों ही हाथों से ढाल को।

1. दोष, 2. अधिक सुंदर, 3. निराश, 4. उपमा, 5. पक्ष, 6. शब्दों की पोशाक, 7. कल्पना,
8. मुस्कुराहट, 9. गुप्त, 10. दुःख, 11. मिलन-जैसा आनन्द, 12. प्रेमी, 13. क्षण,
14. सुन्दरता, 15. प्रेमी, 16. ध्यान, 17. महीना और वर्ष, 18. कला, 19. आश्चर्य,
20. देख

रखेंगे याद, आपने हम यूँ भुला दिये।  
दिल से सभी नुकूश<sup>1</sup> हमारे मिटा दिये।

रौशन<sup>2</sup> तखेयुलात<sup>3</sup> का ऐवाँ<sup>4</sup> था रात-भर,  
यादों के झिलमिलाते दिये कुछ जला दिये।

मफ़हूम<sup>5</sup> ने कुछ और ही वुसअृत<sup>6</sup> तलाश ली,  
अश्कों ने चन्द हुरूफ<sup>7</sup> जो ख़त में मिटा दिये।

महरूमियों<sup>8</sup> की नेमतें<sup>9</sup> बख्शीं तमाम उम्र,  
किस्मत ने जो किये थे, वो वादे निभा दिये।

इनआमे-सब्र<sup>10</sup> कर गयी मंज़िल मुझे अता<sup>11</sup>,  
मैंने बस अपने पाँव के छाले दिखा दिये।।

आखिर को दिल का हाल सुना ही दिया उन्हें,  
थे जो परिन्दे कैद, वो सारे उड़ा दिये।

हायल<sup>12</sup> न राहे-शौक<sup>13</sup> में शिकवे-गिले<sup>14</sup> रखे  
गोया<sup>15</sup>, तमाम मील के पथर हटा दिये।।

शौके-नज़र<sup>16</sup> का लेते रहे जल्वे<sup>17</sup>, इम्तहाँ,  
पर्दे उठा दिये, कभी पर्दे गिरा दिये।

दीवानगी-ओ-कोहकनी<sup>18</sup>, सहरानवर्दी<sup>19</sup>,  
क्या-क्या हुनर न इश्क ने “शैदी” सिखा दिये।।

1. चिन्ह, 2. प्रकाशमान, 3. कल्पना, 4. महल, 5. अर्थ, 6. विस्तार, 7. अक्षर, 8. निराशा,
9. दौलत, 10. धैर्य का पुरस्कार, 11. प्रदान, 12. बाधक, 13. प्रेम-पथ 14. शिकायतें,
15. जैसे कि, 16. दृष्टि का शौक, 17. प्रदर्शन 18. पहाड़ तोड़ना 19. जंगलों में घूमना

यूँ हवाओं में मेरी, बात उड़ाया न करो।  
फूँक कर ऐसे, चिरागों को बुझाया न करो ॥

ये मुलाकात की घड़ियाँ हैं बहुत कम यूँ ही,  
खामखाँ<sup>1</sup> रुठ के यूँ वक्त गँवाया न करो ।

घूमती रहती है गुस्ताख<sup>2</sup> ज़माने की नज़र,  
खिड़कियाँ खोल के यूँ सामने आया न करो ॥

मुझको कलियों के मसलने का गुमाँ<sup>3</sup> होता है,  
हर घड़ी दाँत से होठों को दबाया न करो ।

हसरतें<sup>4</sup> मोम की मानिन्द<sup>5</sup> पिघल जायेंगी,  
बेरुखी की ये कड़ी धूप दिखाया न करो ॥

आस्तीनों में कहीं साँप पले होते हैं,  
हर बढ़े हाथ से तुम हाथ मिलाया न करो ।

दोस्त बनने का न होता है सलीक़ा<sup>6</sup> सब में,  
दौलते-मेहरो-करम<sup>7</sup> सब पे लुटाया न करो ॥

लोग खुद अपनी ही बदशक़ल<sup>8</sup> से डर जायेंगे,  
आइना सबको सरे-आम दिखाया न करो ।

1. व्यर्थ ही, 2. अशिष्ट, 3. भ्रम, 4. इच्छायें, 5. भाँति, 6. शिष्टता, 7. कृपा का धन,
8. बुरी शक़ल

जो वक्त से पहले ही बहार अब के गई है।  
गुलशन की फ़िज़ा<sup>1</sup> है कि फ़सुर्दा-सी<sup>2</sup> पड़ी है ॥

महफ़िल में चराग़ों<sup>3</sup> तो नज़र आता है, लेकिन  
ऐ दोस्त! चिराग़ों में उजालों की कमी है।

साकी! ये हुआ क्या है तेरे बादाकशों<sup>4</sup> को?  
आदावो-सलीक़ा<sup>5</sup>, न फ़ने-बादाकशी<sup>6</sup> है ॥

हमसे कहीं महँगे यहाँ बिक जाओ तो जानें,  
ये शर्त है पत्थर की, जो हीरे से लगी है।

जो बात शरीफ़ों की जुबाँ पर नहीं आये,  
वो बात ही अख़बार की सुर्खी में छपी है ॥

नम आँखों में यूँ उनका तसव्वुर<sup>7</sup>, है कि जैसे  
कश्ती<sup>8</sup> कोई काग़ज़ की है, जो तैर रही है।

लगता है कि तहरीरे-मुकद्दर<sup>9</sup> ही बदल दी,  
उसने लबे-नाजुक<sup>10</sup> से जबी<sup>11</sup> मेरी छुई है ॥

गुमनाम हुआ जाता हूँ उर्दू की तरह ही,  
तारीख<sup>12</sup> भले ही मेरी पुरशान<sup>13</sup> रही है।

1. उपवन का वातावरण, 2. मुझाई हुई, 3. दीपावली, 4. मदिरा-प्रेमी, 5. शिष्टता,
6. मध्यपान की कला, 7. कल्पना, 8. नाव, 9. भाग्य-लेख, 10. नाजुक होंठ, 11. मस्तक,
12. इतिहास, 13. वैभवपूर्ण

हम प्रेम के फन्दे में गिरफ्तार हैं किनके? इनके।  
तेवर<sup>1</sup> भी हर इक बात में दमदार हैं किनके? इनके ॥

हँस-हँस के उतर जाते हैं ये सब के दिलों में,  
मीठे हैं, मगर, तेज़ ये हथियार हैं किनके? इनके ॥

हर दिल में बना लेते जगह अपने हुनर<sup>2</sup> से,  
बतलाइये, हर दिल से जुड़े तार हैं किनके? इनके ।

छपते हैं खुले आम रकीबों<sup>3</sup> के क़सीदे<sup>4</sup>,  
रुस्या<sup>5</sup> जो हमें करते वो अखबार हैं किनके? इनके ॥

देते ये मरज़<sup>6</sup> दिल का तो देते हैं दवा भी,  
क्या फ़िक्र भला हमको? कि बीमार हैं किनके? इनके ।

जब मान लिया दिल से इन्हें अपना निगहबाँ<sup>7</sup>,  
तब एक नहीं, दो नहीं, सौ बार हैं किनके? इनके ॥

माना कि नहीं पास<sup>8</sup> इन्हें कुछ भी वफ़ा का,  
हम फिर भी सरे-आम<sup>9</sup>-वफ़ादार हैं किनके? इनके ।

कहने को तो “शैदी” ने ग़ज़ल आम<sup>10</sup> कही, पर,  
महफ़िल में सुनाने को तलबगार<sup>11</sup> हैं किनके? इनके ॥

1. भृकुटि-भंगिमा, 2. कला, 3. प्रतिद्वंद्वी, 4. प्रशंसा-गान, 5. बदनाम, 6. रोग, 7. संरक्षक,
8. लिहाज़, 9. खुले तौर पर, 10. सामान्य, 11. इच्छुक

ये कैसा ख़ला<sup>1</sup>, जिसमें फ़्लक<sup>2</sup> है न ज़मीं है।  
फिर भी ये वहम<sup>3</sup> दिल में है, कोई तो कहीं है ॥

है आलमे-हस्ती<sup>4</sup> भी शबे-हिज्ज़<sup>5</sup> की सूरत<sup>6</sup>,  
मायूसिये-दिल<sup>7</sup> में भी निहाँ<sup>8</sup>, कुछ तो यकीं<sup>9</sup> है ।

क्या कुव्वते-रफ़तार<sup>10</sup> दिखाऊँ मैं जहाँ<sup>11</sup> को?  
उड़ने को फ़्लक ही है, न चलने को ज़मीं है ॥

किस-किस पे भरोसा हो? करूँ किस से शिकायत?  
अपना जिसे कहता हूँ, वही अपना नहीं है ।

कमज़ोर न कर दे कोई, इन दोनों के रिश्ते,  
है मेरा सफीना<sup>12</sup> जहाँ, तूफ़ाँ भी वहीं है ॥

ऐ बक<sup>13</sup>! फ़क़त<sup>14</sup> तुझसे नहीं खौफ़ज़दा<sup>15</sup> मैं,  
सैयाद<sup>16</sup> भी गुलशन में, छिपा बैठा कहीं है ।

जुगनू ही सही, खौफ<sup>17</sup> अँधेरों का मुझे कब?  
जुर्मत<sup>18</sup> किसी सूरज से मेरी कम तो नहीं है ॥

मुश्ताक<sup>19</sup> है खिलने को हर इक गुंचा<sup>20</sup>, कि गोया<sup>21</sup>  
वेताव नुमाइश<sup>22</sup> के सबव<sup>23</sup> पर्दानशीं<sup>24</sup> है ।

तस्वीह<sup>25</sup> के दानों पे भरोसा किये बैठा,  
उस तालिबे-जन्नत<sup>26</sup> का न ईमाँ है, न दीं<sup>27</sup> है ॥

1. अंतरिक्ष, 2. आकाश, 3. संदेह, 4. जीवन की दशा, 5. वियोग की रात, 6. समान,
- 7 दिल की निराशा, 8. छिपी हुई, 9. आशा, 10. गति की शक्ति, 11. संसार, 12. नाव,
13. विजली, 14. केवल, 15. भयभीत, 16. चिड़ीमार, 17. भय, 18. साहस, 19. अभिलाषी,
20. कली, 21. जैसे, 22. प्रदर्शन, 23. हेतु, 24. पर्दायुक्त, 25. पूजा की माला, 26. स्वर्ग  
चाहने वाला, 27. दीन-धर्म

औकात<sup>1</sup> सामईन<sup>2</sup> की वो तोल रहा है।  
रुक-रुक के अपने राज<sup>3</sup> को जो खोल रहा है॥

कल तक जुवान जिसकी न खुलती थी बज्म<sup>4</sup> में,  
है कोई तो, वो जिसके दम पे बोल रहा है।

दिलकश<sup>5</sup> है उसकी बात, प<sup>6</sup>, मश्कूक<sup>7</sup> है ख़्याल<sup>8</sup>,  
गोया<sup>9</sup>, शराब में ज़हर वो घोल रहा है॥

शायद नहीं है वज्ज<sup>10</sup> ही कुछ उसकी बात में,  
महफ़िल में ज़ोर-ज़ोर से जो बोल रहा है।

है सामने न कोई, मगर, लग रहा मुझे,  
इक अक्स<sup>11</sup> है जो आइने में डोल रहा है॥

ठुकरा रहा है ताज वो किस नाज<sup>12</sup> से फ़कीर  
ताउम्र<sup>13</sup> जिसके हाथ में कश्कोल<sup>14</sup> रहा है।

छोटी कहीं पड़े न वुसअृत<sup>15</sup> आसमान की,  
तायर<sup>16</sup> बड़े यकीन से पर तोल रहा है॥

खुदारियों<sup>17</sup> का क्या वो सबक सीख सकेगा?  
हर वक्त जिसके हाथ में कजकोल<sup>18</sup> रहा है।

तशीह<sup>19</sup> कर रहा है वो “शैदी” की ग़ज़ल की,  
मिसरों<sup>20</sup> में जिसके नागवार<sup>21</sup> झोल रहा है।

1. सामर्थ्य, 2. श्रोता, 3. भेद, 4. महफ़िल, 5. मनोहर, 6. पर, 7. संदिग्ध, 8. विचार,
9. जैसे कि, 10. भार, 11. प्रतिबिम्ब, 12. गर्व, 13. उम्र-भर, 14. भिक्षापात्र,
15. विशालता, 16. पक्षी, 17. स्वाभिमान, 18. भिक्षापात्र, 19 व्याख्या, 20. ग़ज़ल के शेर की पंक्ति, 21. असहनीय

अब्र<sup>1</sup> नफरत का बरसता है, खुदा खैर करे।  
हर तरफ़ कहर<sup>2</sup>-सा बरपा<sup>3</sup> है, खुदा खैर करे ॥

चुन भी पाये न थे अब तक शिकस्ता<sup>4</sup> आईने  
संग<sup>5</sup> फिर उसने उठाया है, खुदा खैर करे ।

जो गया था अभी इस सिम्त<sup>6</sup> से लिये खंजर,  
जाने क्या सोच के पल्टा है, खुदा खैर करे ॥

कातिले-शहर के हमराह<sup>7</sup> सैकड़ों लश्कर<sup>8</sup>,  
हाकिमे-शहर<sup>9</sup> अकेला है, खुदा खैर करे ।

लोग इस गाँव के, उस गाँव से मिलें कैसे?  
दरमियाँ<sup>10</sup> खून का दरिया है, खुदा खैर करे ॥

किसलिये नींद में अब डरने लगे हैं बच्चे,  
खाब आँखों में ये कैसा है, खुदा खैर करे ।

उम्र-भर आग बुझाता जो रहा वस्ती में,  
घर उसी शख्स<sup>11</sup> का जलता है, खुदा खैर करे ॥

जाने उस शख्स ने देखे हैं हादसे<sup>12</sup> कैसे,  
वो दुआ सबको ये देता है- “खुदा खैर करे” ।

कितना पुरशोर<sup>13</sup> था माहौल<sup>14</sup> मेरी वस्ती का,  
नागहाँ<sup>15</sup> किसलिये चुप-सा है, खुदा खैर करे ॥

1. बादल, 2. विपत्ति, 3. छाया हुआ, 4. ढूटे हुए, 5. पत्थर, 6. ओर, 7. साथ 8. सेना,
9. नगर का पदाधिकारी, 10. बीच में, 11. व्यक्ति, 12. दुर्घटनायें, 13. कोलाहलपूर्ण,
14. वातावरण, 15. अचानक

किसलिए दिल को गुनहगार कहा जाता है?  
इक इबादत है जिसे प्यार कहा जाता है ॥

दिल में नफ़रत का न होता था कहीं नामो-निशाँ,  
यूँ भी होता था कभी प्यार, कहा जाता है ।

सच तो ये है कि निगहबाँ<sup>1</sup> है गुलो-गुंचा<sup>2</sup> का,  
सहने-गुलशन<sup>3</sup> में जिसे खार<sup>4</sup> कहा जाता है ॥

हम उसी दौर<sup>5</sup> के इन्साँ हैं कि जिसमें अक्सर,  
हक़पसंदों<sup>6</sup> को ख़तावार<sup>7</sup> कहा जाता है ।

है अगर शक् कोई तुमको मेरी खुदारी<sup>8</sup> पर,  
तो बता दो किसे खुदार कहा जाता है?

बाअदब<sup>9</sup> है जो, वही आविदे-बादाखाना<sup>10</sup>,  
बे-सलीका<sup>11</sup> है तो मयख्वार<sup>12</sup> कहा जाता है ।

है अजब रस्म ये उल्फ़त के शबिस्तानों<sup>13</sup> की,  
जो है ख्वाबीदा<sup>14</sup>, वो बेदार<sup>15</sup> कहा जाता है ॥

“गौर<sup>16</sup> जाता है मेरी सिम्त<sup>17</sup>? ” ये पूछा जब भी,  
हँस के उसने यही हर बार कहा ‘‘जाता है’’ ।

1. संरक्षक, 2. फूल-कली, 3. बाग का आँगन, 4. काँटा, 5. समय, 6. सत्यनिष्ठ,
7. अपराधी, 8. स्वाभिमान, 9. शिष्ट, 10. मदिरालय का तपस्वी, 11. अशिष्ट, 12. शराबी,
13. शयनागार, 14. सोया हुआ, 15. जाग्रत, 16. ध्यान, 17. ओर

यूँ तो वो माहिरे-गुफ्तार<sup>1</sup> कहा जाता है।  
हाले-दिल है कि न इक बार कहा जाता है॥

जिस्मो-ईमान भी, इज्जत भी, सभी बिकते हैं,  
सच है, दुनिया को जो बाज़ार कहा जाता है।

बाइसे-हक<sup>2</sup> जो हुकूमत<sup>3</sup> से लड़े, खूब उसे  
आज के दौर में गढ़दार कहा जाता है॥

जिसने दुनिया को हज़ारों ही मसीहा<sup>4</sup> बख्तों  
आज उस कौम को बीमार कहा जाता है।

जो समझता रहे सर दार<sup>5</sup> पे लटका हर दम,  
वो असरदार ही सरदार कहा जाता हैं।

इसकी सुखर्डी में है किदरि-जुनूने-इंसाँ<sup>6</sup>,  
खूब बिकता है ये अखबार, कहा जाता है।

हल्कए-ऐश<sup>7</sup> में धूमेगा भला क्या “शैदी”,  
वो उसूलों<sup>8</sup> में गिरफ्तार कहा जाता है॥

1. बोलचाल में कुशल, 2. सत्य के लिये, 3. शासन, 4. दैवी चिकित्सक, 5. सूली, 6. व्यक्ति के उन्माद की भूमिका, 7. भोग विलास का क्षेत्र 8. नियम

अब ग़मे-दिल से नहीं डरता है दिल।  
दिल्लगी की बात अब करता है दिल ॥

दिल के हाथों हो गये मज्बूर हम,  
जाने क्या-क्या ख्वाहिशें<sup>1</sup> करता है दिल ।

दिल ही दिल में रह गयी वो दिल की बात,  
उनसे कहने में ज़रा डरता है दिल ॥

गर्दिशो-दौराँ<sup>2</sup> का कब तक ग़म करें?  
रोज़ जीता, रोज़ ही मरता है दिल ।

दिल भर आता, बेदिली की बात पर,  
दिल न टूटे, बस यही डरता है दिल ॥

आओ! महफिल हम सजायें बैठ कर,  
दिल की कुछ बातें करें, करता है दिल ।

कुछ कहो तुम, कुछ सुनें हम, दिल की बात,  
दिल की बातों से कहाँ भरता है दिल?

1. इच्छायें, 2. काल-चक्र

अब न पड़ती कुद्रती सिंगार पर।  
सुन्ह की पहली नज़र अखबार पर॥

जिन्दगी यूँ हमको उरियाँ<sup>1</sup> कर गयी,  
जैसे नारे हों लिखे दीवार पर।

नाखुदा<sup>2</sup> बागी<sup>3</sup>, मुखालिफ़<sup>4</sup> है हवा,  
हौसला अब भी टिका पतवार पर॥

कौन देगा हमको मुँह माँगी रक़म?  
कीमतें जब मुन्हसर<sup>5</sup> बाज़ार पर।

लुट गये बस्ती में उनके भी मकाँ?  
था भरोसा जिनको पहरेदार पर।

धूप भी उससे किनारा कर चली,  
शम्स<sup>6</sup> क्या लटका उफ़क़<sup>7</sup> की दार<sup>8</sup> पर।

सिफ़ फ़िक्रे-आशियाँ<sup>9</sup> हो क्यों मुझे?  
बक़<sup>10</sup> टूटी है मेरे गुलज़ार पर॥

1. नंगा, 2. मल्लाह, 3. विद्रोही, 4. विरुद्ध, 5. निर्भर, 6. सूर्य, 7. क्षितिज, 8. सूली,
9. घोंसले की चिन्ता 10. विजली

आओ! गुज़रे ज़माने की बातें करें।  
बारिशों में नहाने की बातें करें॥

नाव काग़ज़ की बैठे बनाते रहें,  
और सैलाब<sup>1</sup> आने की बातें करें।

फूल काढ़े थे तुमने जो रुमाल पर,  
उस महकते ख़ज़ाने की बातें करें॥

उस ख़्यालों के रंगीं नगर से कभी,  
लौट कर फिर न आने की बातें करें।

रात बिस्तर में तकिये से सर को दबा,  
आँसुओं को छिपाने की बातें करें।

कुछ न कुछ तो रही वज्ह<sup>2</sup>, बिछुड़े जो हम,  
भूल अब उसको जाने की बातें करें।

भूल जाओ कि मिलने नहीं पाये हम,  
बस अधूरे फ़साने<sup>3</sup> की बातें करें।

1. बाढ़, 2. कारण, 3. कहानी

ग़म ही ग़म लिक्खे हुए तकदीर में।  
कुछ तो है मखूस<sup>1</sup> इस तहरीर<sup>2</sup> में॥

दौड़ने का हुक्म है हमको मिला,  
पाँव हैं जकड़े हुए ज़ंजीर में॥

शमअ<sup>3</sup> के अन्दर से ही उठता धुआँ,  
तीरगी<sup>4</sup> भी ज़ज़ब<sup>5</sup> है तन्वीर<sup>6</sup> में।

कर न पाया आरजूओं पर फ़त्ह<sup>7</sup>,  
है कसक ये क़ल्बे-आलमगीर<sup>8</sup> में॥

हौसला तो बाजुओं में चाहिये,  
दम कहाँ होता भला शमशीर<sup>9</sup> में??

है यकीं, शहकार<sup>10</sup>, बन जायेगी यह,  
तुम उभर आये अगर तस्वीर में॥

जब लगा “शेदी”, निशाने पर लगा,  
कुछ तो खूबी है नज़र के तीर में॥

1. विशेष, 2. लिखावट, 3. अँधेरा, 4. समाया हुआ, 5. प्रकाश, 6. विजय, 7. विश्वविजेता का दिल, 8. तलवार, 9. अति उत्तम कृति।

खुश हैं दयारे-शौक<sup>1</sup> में हस्ती<sup>2</sup> गुज़ार के,  
हमने खिज़ाँ<sup>3</sup> में लुत्फ़ लिये हैं बहार के ॥

सैरे-चमन को आये तो ढलने लगी बहार,  
लोगों ने लुत्फ़ लूट लिये सब बहार के ।

कमज़ोर मान वैठा मुख़ालिफ़<sup>4</sup> को, भूल की,  
महसूस हो रहा है ये, बाज़ी को हार के ॥

ठहरी अबस<sup>5</sup> उमीदे-वफ़ा<sup>6</sup>, अपनी उम्र-भर,  
नुक़सान में ही रहते हैं सौदे उधार के ।

अपनी दग्धा को कैसे छिपा पायेगा भला?  
हमदम<sup>7</sup> का ले तो आयेगा वो सर उतार के ॥

अब उस मिज़ाज के हैं कहाँ अहले-अंजुमन<sup>8</sup>,  
मिलती थीं जिनको राहतें<sup>9</sup>, महफ़िल सँवार के ।

मरने के बाद भी न गयी है शिकस्तगी<sup>10</sup>  
पथर उखड़ने लग गये मेरे मज़ार<sup>11</sup> के ॥

लगता है सफ़र दश्त<sup>12</sup> का तन्हा<sup>13</sup> ही जायेगा,  
हासिल भी क्या हुआ है, किसी को पुकार के ।

1. प्रेम-लोक, 2. जीवन, 3. पतझड़, 4. प्रतिष्ठानी, 5. व्यर्थ, 6. वफ़ा की आशा 7. मित्र,
8. महफ़िल वाले, 9. शांति, 10. टूट-फूट, 11. कब्र, 12. जंगल, 13. अकेले

जब भी महवे-जुस्तजू<sup>1</sup> होता हूँ मैं।  
एक तन्हा आरजू<sup>2</sup> होता हूँ मैं॥

इूबता हूँ जब ख़यालों में तेरे,  
तेरे-जैसा हू-ब-हू होता हूँ मैं।

रंग में आती है बज़मे-मय<sup>3</sup>, कि जब  
रिन्द<sup>4</sup> तू, जामो-सुबू<sup>5</sup> होता हूँ मैं॥

मुँह हरीफों<sup>6</sup> के हैं खुलते किस क़दर,  
जब भी बज़हे-गुफ़तगू<sup>7</sup> होता हूँ मैं।

जब तलक मुझ पे न हो उनकी नज़र,  
किस क़दर बेआबरू<sup>8</sup> होता हूँ मैं॥

जिसकी किस्मत में नहीं मक़बूलियत,<sup>9</sup>  
एक ऐसी आरजू<sup>10</sup> होता हूँ मैं।

चश्मे-तर<sup>11</sup> से हो नदामत<sup>12</sup>, जब कभी  
पाक<sup>13</sup>, तब मिस्ले-वुजू<sup>14</sup> होता हूँ मैं॥

1. तलाश में व्यस्त, 2. अकेली इच्छा, 3. मदिरापान की सभा, 4. पियककड़, 5. मदिरापात्र,
6. प्रतिद्वन्द्वी, 7. वार्तालाप का कारण, 8. प्रतिष्ठाहीन, 9. प्रसिद्धि, 10. इच्छा, 11. भीगी आँख,
12. पश्चाताप, 13. पवित्र, 14. नमाज़ से पहले मुँह-धोने की भाँति

दयारे-इश्क<sup>1</sup> है, बस्ती नहीं है।  
किसी की भी यहाँ चलती नहीं है।

है फ़र्सूदा<sup>2</sup> तबस्सुम<sup>3</sup> की ये चादर,  
नमी आँखों की अब छिपती नहीं है॥

विरासत में ही मिलती है शराफ़त,  
ये शै बाज़ार में बिकती नहीं है।

ग़मों का बोझ बढ़ता जा रहा है,  
ये गठरी मुझसे अब उठती नहीं है॥

मुसलसल<sup>4</sup> कब से क़ाबिज़<sup>5</sup> बदनसीबी<sup>6</sup>  
ये कैसी शब<sup>7</sup> है जो ढलती नहीं है।

अँधेरों पर कभी क़ाबिज़ थे जुगनू,  
चिरागों की भी अब चलती नहीं है॥

सँभाले हूँ मैं तूफाँ को बराबर  
हवा के रुख़ पे ये कश्ती नहीं है।

1. प्रेमलोक, 2. जीर्ण-शीर्ण 3. मुस्कुराहट, 4. निरंतर, 5. कब्ज़ा किये हुए 6. दुर्भाग्य  
7. रात

बचा के लाये हैं हम किस तरह सफीनों<sup>1</sup> को ।  
ये क्या खबर है भला, इन तमाशबीनों<sup>2</sup> को ॥

बहारे-गुल को, गुलिस्ताँ<sup>3</sup> को, गुलजबीनों<sup>1</sup> को ।  
खुदा बचाये किसी चश्मे-बद<sup>5</sup> से तीनों को ॥

मशीन बन गया लगता है आज वो, खुद ही,  
बना रहा है जो अहले-खिरद<sup>6</sup>, मशीनों को ।

करेंगे कद्र वो क्या? ज़िन्दगी के लम्हों<sup>7</sup> की,  
जो गिन रहे हैं, फ़क़त<sup>8</sup> साल और महीनों को ॥

ये क्या? वही हमें बेकायदा समझते हैं,  
जो जानते ही नहीं कायदा-करीनों<sup>9</sup> को ।

लिखा है जब भी तेरा नाम, तो लगा, जैसे  
सजा दिया हो करीने<sup>10</sup> से कुछ नगीनों को ॥

उसी का नाम है अर्श-अदब<sup>11</sup> के परचम पर,  
बुलन्द जिसने किया शेर की ज़मीनों को ।  
(जनाव “अर्श” मलियानी के इस मिसरा-तरह पर कही गज़ल ।)

1. नाव, 2. दर्शक, 3. उपवन, 4. फूल जैसे चेहरे वाले, 5. बुरी नज़र, 6. बुद्धिमान 7. क्षण,
8. केवल, 9. शिष्टता व नियम, 10. क्रम, 11. साहित्य-गगन

जुल्म सह कर भी, न उफ आई, जुबाँ पर मेरी ।  
याद आयेगी तुझे भी, ऐ सितमगर<sup>1</sup> ! मेरी ॥

एक मैं ही उन्हें हमदर्द<sup>2</sup> नज़र आता हूँ,  
हादसे<sup>3</sup> राह तका करते हैं अक्सर, मेरी ।

तेरी ख़ातिर मैं बहुत भटका, सुकूने-मंज़िल<sup>4</sup> ।  
राह निकली भी तो सहरा<sup>5</sup> से गुज़र कर, मेरी ॥

ज़िन्दगी ! तेरे लिये पाँव सिकोड़े जितने,  
उतनी छोटी हुई, हर बार ही, चादर मेरी ।

ज़िन्दगी-भर तो रहे ख़ार<sup>6</sup> हमनशीं<sup>7</sup> अपने,  
लाश अब आई है, फूलों में लिपट कर मेरी ॥

उनको भी मंज़िले-नायाब<sup>8</sup> का दर्जा हासिल,  
जिन मकामात<sup>9</sup> से गुज़री है रहगुज़र मेरी ।

कितनी छोटी नज़र आती है ये दुनिया “शैदी”  
अब बुलन्दी पे है परवाज़<sup>10</sup> किस कदर, मेरी ॥

1. अत्याचारी, 2. दुःख में साथी, 3. दुर्घटनायें, 4. मंज़िल पाने का सुख, 5. रेगिस्तान,
6. काँटे, 7. साथी, 8. दुर्लभ मंज़िल, 9. पड़ाव, 10. उड़ान

हासिल<sup>1</sup> मुझे है जो, वो ज़रूरत से कम नहीं।  
पासे-मशीयत<sup>2</sup> अपना, इबादत<sup>3</sup> से कम नहीं ॥

पहना रहे हैं ताज वो, दस्तार<sup>4</sup> फेंक कर,  
शोहरत<sup>5</sup> ये मेरे वास्ते, ज़िल्लत<sup>6</sup> से कम नहीं ।

बस्ती में लोग आग लगाकर चले गये,  
जो रौशनी उठी है, वो जुल्मत<sup>7</sup> से कम नहीं ।

दिल को ग़मे-फ़िराक<sup>8</sup> का ख़ूगर<sup>9</sup> बना दिया,  
वादाखिलाफ़ियाँ भी इनायत<sup>10</sup> से कम नहीं ।

उनके बिना भी बज्म में, उनका ही ज़िक्र है,  
ग़ेर हाज़िरी भी उनकी तो शिर्कत<sup>11</sup> से कम नहीं ॥

चाहे बुरा वो मेरा, मगर, चाहता तो है,  
ऐसी अदावतें<sup>12</sup> भी मुहब्बत से कम नहीं ।

होते नहीं हो, फिर भी मेरे साथ ही हो तुम,  
है ख्वाब ही ये, फिर भी, हक़ीक़त से कम नहीं ॥

1. प्राप्त,
2. ईश्वर की इच्छा का लिहाज़,
3. पूजा,
4. पगड़ी,
5. प्रसिद्धि,
6. अपमान,
7. अंधकार,
8. वियोग का दुःख,
9. आदी,
10. कृपा,
11. भागीदारी,
12. दुश्मनी

हमारे साथ मुसलसल<sup>1</sup> ख़्याले-यार<sup>2</sup> चले ।  
शबे-विसाल<sup>3</sup> तसव्वुर<sup>4</sup> में ही गुज़ार चले ॥

निसार<sup>5</sup> उनके हसीं रुख<sup>6</sup> पे हैं बहारें भी  
चमन में आके वो हुस्ने-चमन<sup>7</sup> निखार चले ।

फुसूने-इश्क<sup>8</sup> कहें या कि बेबसी<sup>9</sup> दिल की,  
क़दम जो खुद ही मेरे, सिम्ते-कू-ए-यार<sup>10</sup> चले ॥

है अंजुमन<sup>11</sup> में न बेहिस<sup>12</sup> कोई तअस्सुर<sup>13</sup> से,  
ज़िया-ए-शमा<sup>14</sup> बढ़े, जब भी ज़िक्रे-यार<sup>15</sup> चले ।

उन्हें तो मंज़िले-मक़सूद<sup>16</sup> मिल ही जानी थी,  
जो लोग राहे-अमल<sup>17</sup> में पुरएतबार<sup>18</sup> चले ॥

गिरां<sup>19</sup> थी जीस्त<sup>20</sup> बहुत, आखिरी सफर के लिये,  
चलो ये बार<sup>21</sup> भी अब सर से हम उतार चले ।

ख़्याल उनका सुकूँबर<sup>22</sup> है आलमे-ग़म<sup>23</sup> में,  
भरी तपिश<sup>24</sup> में, हवा जैसे खुशग़वार<sup>25</sup> चले ॥

1. लगातार, 2. प्रियतम का ध्यान, 3. मिलन-रात्रि, 4. कल्पना, 5. न्यौछावर, 6. सुंदर चेहरा,
7. बाग का सौंदर्य, 8. प्रेम का जादू, 9. विवशता, 10. प्रियतम की गली की ओर,
11. महफिल, 12. चेतना शून्य, 13. प्रभाव, 14. शमा की रोशनी, 15. प्रियतम की चर्चा,
16. इच्छित मंज़िल, 17. कर्तव्य-पथ, 18. विश्वास के साथ, 19. भारी, 20. ज़िन्दगी,
21. भार, 22. शांतिदायक, 23. दुःख की दशा, 24. गर्मी, 25. मनमोहक

ग़म-आशना<sup>1</sup> है दिल मेरा, ग़म बेहिसाब दे।  
रहमत<sup>2</sup> को दूँ सदा तेरी, इतना अज़ाब<sup>3</sup> दे ॥

कुछ और अभी दूर हैं, उल्फ़त की मंज़िलें,  
कुछ और जुनूँ<sup>4</sup>, ऐ दिले-ख़ानाख़राब<sup>5</sup> दे ।

आ जायें नज़र मुझको नई कुछ बुलन्दियाँ<sup>6</sup>,  
ऐ ज़ौके-जुस्तजू<sup>7</sup>! मुझे कुछ ऐसे ख्वाब दे ॥

माँगूँ जो कम तो होगी ये तौहीने-नवाज़िश<sup>8</sup>,  
देना ही चाहता है तो फिर आफ़ताब<sup>9</sup> दे ।

उल्फ़त गुनाह<sup>10</sup> है, बता वाइज़<sup>11</sup>! लिखा कहाँ?  
ला, मैं भी देख लूँ, ज़रा अपनी किताब दे ॥

उल्फ़त है क्या? ये हासिले-हस्ती<sup>12</sup> का नाम है,  
मेरा जवाब ये है, तू बेहतर जवाब दे ।

जी चाहता है, फिर जिउँ गर्मी-ए-मुहब्बत<sup>13</sup>,  
“शैदी” सुकूने-दिल<sup>14</sup> को ज़रा इज़तराब<sup>15</sup> दे ॥

1. दुख से परिचित, 2. कृपा, 3. यातना, 4. उन्माद, 5. अभागा दिल, 5. ऊँचाइयाँ,
6. तलाशने का शौक, 8. कृपा का अपमान, 9. सूर्य, 10. पाप, 11. उपदेशक, 12. जीवन  
की उपलब्धि, 13. प्रेम की गर्मी, 14. दिल की शांति, 15. बेचेनी

क्यों मनाये न भला जश्न खिल्अतपोशी<sup>1</sup> का?  
मिल गया है जो सिला<sup>2</sup> उसको कदमबोसी<sup>3</sup> का ॥

जौके-पैमाना<sup>4</sup> भी क्या है कि बारहा<sup>5</sup>, यारो!  
हम अहद<sup>6</sup> करते रहे तक्के-बादानोशी<sup>7</sup> का ।

जब ये चढ़ता है तो मसरूर<sup>8</sup> कर ही जाता है,  
हो इबादत<sup>9</sup> का नशा या, कि हो मयनोशी<sup>10</sup> का ॥

साकिया! और पिला कर मुझे बेहोश न कर,  
लुत्फ<sup>11</sup> लेने दे मुझे आलमे-मदहोशी<sup>12</sup> का ।

लम्हे<sup>13</sup>-भर को तो लरज़<sup>14</sup> उट्ठी तेगे-कातिल<sup>15</sup> भी,  
हौसला देख के बेखौफ<sup>16</sup> सरफ़रोशी<sup>17</sup> का ॥

कर के इज़हारे-तमन्ना<sup>18</sup> भी तसल्ली न हुई,  
दूँढ़ते ही रहे मतलब तेरी ख़मोशी का ।

लज्ज़ते-वस्ल<sup>19</sup> न था अपना मुकद्दर “शैदी”,  
क्या दें इल्ज़ाम<sup>20</sup> उसे वादाफ़रामोशी<sup>21</sup> का ॥

1. सम्मानार्थ भेंट पोशाक को पहनना, 2. पुरस्कार, 3. चरण-चुंबन, 4. मदिरापान का आनन्द, 5. बार-बार, 6. प्रतिज्ञा, 7. मदिरापान का त्याग, 8. आनंदित, 9. पूजा, 10. मदिरापान, 11. आनन्द, 12. मतवालापन, 13. क्षण, 14. काँप, 15. हत्यारे की तलवार, 16. निडर, 17. बलिदान, 18. इच्छा प्रकट, 19. मिलन का आनन्द, 20. दोष, 21. प्रतिज्ञा-भंग

यादों से शबिस्ताँ<sup>1</sup> को सजाने भी दीजिये।  
तारीकियों<sup>2</sup> में धूप उगाने भी दीजिये ॥

अब छाने लगी अपनी तमन्नाओं<sup>3</sup> पर थकन,  
कुछ ख्वाब नये हमको सजाने भी दीजिये।

मायूस<sup>4</sup> हो के जाये न घर से मेरे हवा,  
उसको मेरे चिराग् बुझाने भी दीजिये।

कब से निगाहे-शौक<sup>5</sup> है बेताबो-मुंतज़िर<sup>6</sup>,  
अब पर्दा-ए-जमाल<sup>7</sup> उठाने भी दीजिये।

उनके सितम<sup>8</sup> हैं कितने? ज़फ़ाओं का क्या शुमार<sup>9</sup>?  
हम क्या बतायें? छोड़िये, जाने भी दीजिये ॥

वो भी तो जान जायें कि क्या शै<sup>10</sup> है लाइलाज़,  
चारागरों<sup>11</sup> को ज़ख्म दिखाने भी दीजिये।

देखा है ज़िन्दगी का हुनर<sup>12</sup> हमने उम्र-भर,  
अब मौत को भी देख लें, आने भी दीजिये ॥

1. शयनागार, 2. अंधेरे, 3. इच्छायें, 4. निराश, 5. प्रेम-दृष्टि, 6. बेचैन और प्रतीक्षारत,
7. सौंदर्य का पर्दा, 8. अत्याचार, 9. गिनती, 10. चीज़, 11. चिकित्सक, 12. कला

वाबस्ता<sup>1</sup> मुझसे यूँ है वो उम्रे-तमाम<sup>2</sup> तक।  
ज्यों सिलसिला हुनर<sup>3</sup> का है, मिट्टी से जाम<sup>4</sup> तक ॥

महदूद<sup>5</sup> उस तलक ही मेरा दायरा-ए-इश्क<sup>6</sup>,  
दिन का बुजूद<sup>7</sup>, जैसे, सहर<sup>8</sup> से है शाम तक।

पासे-अदब<sup>9</sup> का रंग चढ़ा हम पे इस कदर  
शाइस्तगी<sup>10</sup> से लेते हैं हम इन्तकाम<sup>11</sup> तक ॥

ये मस्लेहत<sup>12</sup> है या ग़रज़<sup>13</sup>, जो बन रहे मुरीद<sup>14</sup>,  
लाते जुबाँ पे थे न कभी मेरा नाम तक।

मेरी तलब<sup>15</sup> तो जुस्तजू-ए-राहे-नौ<sup>16</sup> की थी,  
ले आयी थकन, मुझको, मगर, राहे-आम<sup>17</sup> तक।

मंजिल पे पहुँचकर ये नयी फ़िक्र है उसे,  
पहुँचे न कोई और भी उसके मकाम<sup>18</sup> तक ॥

ख़िदमातो-तवाज़ो<sup>19</sup> की तवक्को<sup>20</sup> ही है फ़िजूल<sup>21</sup>,  
बाकी न रहा दिल में ही जब अहतराम<sup>22</sup> तक।

1. संलग्न, 2. पूरी उम्र, 3. कला, 4. शराब का प्याला, 5. सीमित, 6. प्रेम का क्षेत्र,
7. अस्तित्व, 8. सुबह, 9. शिष्टता का लिहाज़, 10. शिष्टता, 11. बदला, 12. विवेक,
13. स्वार्थ, 14. शिष्य, 15. इच्छा, 16. नये मार्ग की तलाश, 17. आम रास्ता, 18. स्थान,
19. सेवा-सत्कार, 20. आशा, 21. व्यर्थ, 22. सम्मान

अब आखिरी हिचकी भी उभरती है गले से ।  
ये कैसी सदा<sup>1</sup> हैं जो निकलती है गले से ॥

किस शान से पीती है क़ज़ा<sup>2</sup> बादा-ए-हस्ती<sup>3</sup>,  
जब जिस्म<sup>4</sup> के सागर<sup>5</sup> को पकड़ती है गले से ।

मिल पायेंगे फिर से न कभी गोया<sup>6</sup> विछड़ कर,  
यूँ मौत के सँग ज़िन्दगी मिलती है गले से ॥

आयेगी मेरी याद तुम्हें बादे-क़ज़ा<sup>7</sup> भी,  
यह बात बमुश्किल ही उतरती है गले से ।

आँखों के दरीचों<sup>8</sup> में फ़क़त<sup>9</sup>, जल्वानुमा<sup>10</sup> है,  
है आखिरी ख्वाहिश, न निकलती है गले से ॥

आशिक हैं कोई या कि शहीदाने-वतन<sup>11</sup> हैं,  
हँस कर रसन-उल-दार<sup>12</sup> लिपटती है गले से ।

“शेदी” इसे अब थाम लिया दस्ते-क़ज़ा<sup>13</sup> ने,  
लो चादरे-अनफास<sup>14</sup> फिसलती है गले से ॥

1. आवाज, 2. मृत्यु, 3. जीवन-मदिरा, 4. शरीर, 5. मदिरा पात्र, 6. जैसे कि, 7. मृत्यु के बाद, 8. खिड़की, 9. केवल, 10. शोभायमान, 11. वतन के शहीद, 12. फाँसी की रस्सी, 13. मृत्यु का हाथ, 14. साँस की चादर

फैज़ो-करम<sup>1</sup> में, साकिया<sup>2</sup>! तेरे, कमी न हो।  
ख्वाहिश<sup>3</sup> यही है, ख़त्म मेरी तिश्नगी<sup>4</sup> न हो।

कुछ इस तरह से इश्क का आलम<sup>5</sup> है इन दिनों,  
ज्यों साँस चल रही हो, मगर ज़िन्दगी न हो।

मंजूर है शिकस्त<sup>6</sup>, मगर, शर्त है यही,  
वज्हे-शिकस्त<sup>7</sup> जो भी हो, पर बुज़दिली<sup>8</sup> न हो॥

शिर्कत<sup>9</sup> किसी अज़ाब<sup>10</sup> से क्या कम उधर, जहाँ,  
बज्मे-अदब<sup>11</sup> सजी हो, मगर, शाइरी न हो।

ऐ दोस्त! तू ख़फ़ा<sup>12</sup> ही सही, पर ख़याल रख,  
है दुश्मनी कुबूल<sup>13</sup>, मगर, बेरुख़ी न हो॥

तहज़ीब<sup>14</sup> आ गयी है ये कैसे मुकाम<sup>15</sup> पर,  
पैदा जो बेटियाँ हों तो घर में खुशी न हो।

1. कृपा, 2. मदिरा पिलाने वाला, 3. इच्छा, 4. प्यास, 5. प्रेम-दशा, 6. पराजय, 7. हार का कारण, 8. कायरता, 9. सम्मिलित होना 10. यातना, 11. साहित्यिक गोष्ठी, 12. रुष्ट, 13. मंजूर, 14. सभ्यता, 15. स्थान

यूँ मुत्तहिद<sup>1</sup> हैं तुमसे, सनम! बार-बार हम।  
तुम हो सुकूने-दिल<sup>2</sup> तो दिले-बेकरार<sup>3</sup> हम॥

गुलशन हो, रंगो-बू<sup>4</sup> हो, नसीमे-बहार<sup>5</sup> तुम,  
सहरा<sup>6</sup>, तपिश<sup>7</sup>, थकान औ' गर्दो-गुवार<sup>8</sup> हम॥

साकी हो, जामे-मय<sup>9</sup>, हो, दमे-मैकदा<sup>10</sup> हो तुम,  
तिश्ना<sup>11</sup> हैं, तिही जाम<sup>12</sup> लिये, बादाख्वार<sup>13</sup> हम।

चलिये, ख़ताएँ<sup>14</sup> आपकी करते हैं सब मुआफ<sup>15</sup>  
कब तक भला उठायेंगे दिल पर ये बार<sup>16</sup> हम?

अहले-ख़िज़ाँ<sup>17</sup> थे हम तो, मगर, यह सुकूँ<sup>18</sup> भी है,  
उनके चमन के वास्ते, लाये बहार हम।

आदाबे-आशिकी<sup>19</sup> है कि इख़लासे-दिलबरी<sup>20</sup>,  
हैं तो ख़ताएँ<sup>21</sup> उनकी, मगर, शर्मसार<sup>22</sup> हम॥

1. संयुक्त, 2. मानसिक शांति, 3. बेचैन मन, 4. रंग और गंध, 5. बहार की हवा,
6. रेगिस्तान, 7. गर्मी, 8. धूल-मिट्टी, 9. मदिरा-पात्र, 10. मदिरालय का प्राण, 11. प्यासा,
12. खाली प्याला, 13. मदिरा पीने वाला, 14. अपराध, 15. क्षमा, 16. भार, 17. पतझड़ वाले, 18. संतोष, 19. प्रेम की शिष्टता, 20. प्रेम की निश्छलता, 21. दोष, 22. शर्मिन्दा

हम अपनी बात सुनाते तुम्हें, अगर सुनते।  
गिला<sup>1</sup> था कोई तो कहते, हमारी, पर सुनते॥

हमें तो कुछ भी न कहने की मिल सकी मोहलत<sup>2</sup>,  
ज़माने-भर की रहे, हम तो उम्र-भर सुनते।

लिखा है यूँ तो उन्हें अपना हाले-दिल ख़त में,  
मज़ा तो तब था, वो पहलू<sup>3</sup> में बैठकर सुनते॥

बला का शोर बपा<sup>4</sup>, अपने गिर्द<sup>5</sup> था, यारो!  
भला वो कैसे मेरी आहे-पुरअसर<sup>6</sup> सुनते?

बड़े ही शौक से हाले-तवील<sup>7</sup> सुनते रहे,  
जो लोग फ़ितरतन<sup>8</sup>, बस हाले-मुख्तसर<sup>9</sup> सुनते॥

अजब है हाल जो बीमारे-ग़म हुए “शैदी”,  
न ग़मगुसार<sup>10</sup> ही पूछें, न चारागर<sup>11</sup> सुनते॥

1. शिकायत,
2. अवकाश,
3. बगल,
4. छाया हुआ,
5. चारों ओर,
6. प्रभावी आह,
7. विस्तृत हाल,
8. स्वभावतः,
9. संक्षिप्त हाल,
10. हमदर्द
11. चिकित्सक

जब से वो अपने हुस्न पे मग़रूर<sup>1</sup> हो गया ।  
अपना मिज़ाजे-इश्क<sup>2</sup> भी मशहूर हो गया ॥

शायद मेरी फ़राग़दिली<sup>3</sup>, का ही था असर,  
दिल का हर एक ज़ख्म ही नासूर हो गया ।

मौज़ों<sup>4</sup> से खेलने का हुनर जब से आ गया,  
साहिल<sup>5</sup> भी मुझसे दूर, बहत दूर हो गया ॥

उसका उजूद<sup>6</sup> अब भी मेरे आस-पास है,  
कब का मेरी निगाह से वो दूर हो गया ।

जितनी भी नेकियाँ<sup>7</sup> थीं, वो गुमनाम ही रहीं,  
छोटा-सा इक गुनाह था, मशहूर हो गया ॥

देखा जो आफ़ताब<sup>8</sup> ने, शीशे में झाँक कर,  
पथर का दिल भी झट से चूर-चूर हो गया ।

1. गर्वित, 2. प्रेम का स्वभाव, 3. उदारता, 4. लहर, 5. किनारा, 6. अस्तित्व, 7. अच्छाइयाँ,
8. सूर्य

जिस दिल ने रुलाया है, उसी दिल की तरफ़ हूँ।  
लगता है कि मैं फिर किसी मुश्किल की तरफ़ हूँ॥

जब तेज़ क़दम था तो भटकता ही रहा मैं,  
आहिस्ता<sup>1</sup> क़दम चल के, मैं मंजिल की तरफ़ हूँ।

मुंसिफ बतौर<sup>2</sup> उठाये थे मक़तूल<sup>3</sup> पर सवाल,  
सब ने यही समझा कि मैं क़ातिल की तरफ़ हूँ।

मौजे<sup>4</sup> ही डुबोती रहीं मँझधार में मुझको,  
मौजों के करम से ही मैं साहिल<sup>5</sup> की तरफ़ हूँ।

दुनिया-ए-मसाइल<sup>6</sup> के लिये ज़ेहन<sup>7</sup> की जानिब<sup>8</sup>,  
दुनिया-ए-मुहब्बत हो तो मैं दिल की तरफ़ हूँ।

आईना-सिफ़त<sup>9</sup> दिल है, परखता है हक़ीकत<sup>10</sup>,  
जाहिल<sup>11</sup> का तरफ़दार, न आक़िल<sup>12</sup> की तरफ़ हूँ।

1. धीमा, 2. न्यायालय के रूप में, 3. बधित, 4. लहरें, 5. किनारा, 6. समस्या जगत्,
7. मस्तिष्क, 8. ओर, 9. दर्पण की भाँति, 10. सत्यता, 11. मूर्ख, 12. बुद्धिमान

मेरा मकान हल्क़-ए-मक्तल<sup>1</sup> की हद में है।  
मैं वो दरख़त हूँ कि जो आरी की ज़द में है ॥

उभरा ग़रीबे-शहर के दिल में है इन्क़लाब<sup>2</sup>,  
झूवा अमीरे-शहर भी अपने ही मद<sup>3</sup> में है ।

परवाजे-अर्शे-दोस्ती<sup>4</sup> हो क्या उसे नसीब<sup>5</sup>?  
हर वक्त ही असीर<sup>6</sup> जो कैदे-हसद<sup>7</sup> में है ॥

लड़ कर भी एक साथ हैं, सादा-मिज़ाज लोग,  
इस मस्लेहत<sup>8</sup> की ही कमी अहले-ख़िरद<sup>9</sup> में है ।

है बस उसी की बेटियों के सर पे ओढ़नी,  
जिस शख़्स की निगाह, शराफ़त की हद में है ॥

सोफे पे सूँघ लेता हूँ, खेतों की खुशबुएँ,  
इक गाँव अब भी मेरे तख़ैयुल<sup>10</sup> की ज़द<sup>11</sup> में है ॥

1. वध-गृह की सीमा, 2. क्रान्ति, 3. अहंकार, 4. मित्रता के आकाश की उड़ान, 5. प्राप्त,
6. कैद, 7. ईर्ष्या का कारावास, 8. विवेकशील स्वभाव, 9. बुद्धिमान, 10. कल्पना,
11. सीमा, निशाना

मुट्ठी में अपनी कैद, हवा, करके देखिये।  
कहना तो है आसान, ज़रा कर के देखिये॥

हाथ आयेंगे फल, शाख बहुत दूर नहीं है,  
क़द अपना कुछ तो और बड़ा कर के देखिये।

अहले-ख़िरद<sup>1</sup> की बात हर इक मानी आपने,  
कुछ अहले-जुनूँ<sup>2</sup> का भी कहा, करके देखिये।

अहसासे-मुहब्बत<sup>3</sup> की कशिश<sup>4</sup> देखनी है गर,  
फूलों से तितलियों को जुदा कर के देखिये।

अंजामे-वफ़ा<sup>5</sup> बद<sup>6</sup> ही नहीं होता हमेशा,  
हमसे भी एक बार वफ़ा कर के देखिये।

“शैदी” ग्रमे-अवाम<sup>7</sup> को इज़हार बरिशाये<sup>8</sup>,  
ये कर्ज़ शायरी का अदा कर के देखिये॥

1. बुद्धिमान, 2. दीवाना, 3. प्रेम-भावना, 4. आकर्षण, 5. वफ़ा का परिणाम, 6. बुरा,
7. जन साधारण का दुःख, 8. व्यक्ति कीजिए

ज़फ़ाएँ वो अपनी न कम करने वाले ।  
न तौवा वफ़ा से हैं हम करने वाले ॥

दिले-सख्तजाँ<sup>1</sup> से न मायूस<sup>2</sup> होना,  
मेरे दिल पे मश्के-सितम<sup>3</sup> करने वाले ।

कटा तो गिरा उनके क़दमों में जाकर,  
हैं हैराँ मेरा सर क़लम<sup>4</sup> करने वाले ।

न सज्दों<sup>5</sup> की कर इस क़दर बेनियाजी<sup>6</sup>,  
यूँ ही दर-ब-दर<sup>7</sup> सर को ख़म<sup>8</sup> करने वाले ।

अता<sup>9</sup> कर गया वस्तु<sup>10</sup> की तुझको यादें,  
ये क्या कम है, आँखों को नम करने वाले ॥

तेरे हाले-दिल पर तरस खा रहा हूँ,  
मेरे हाले-दिल को रक़म करने<sup>11</sup> वाले ।

1. कठोर दिल, 2. निराश, 3. अत्याचार करने का अभ्यास, 4. विच्छेद, 5. दंडवत प्रणाम,
6. उपेक्षा, 7. हर द्वार पर, 8. झुकाना, 9. प्रदान, 10. मिलन, 11. लेखन

हमेशा से ही वो मेरा रहा है।  
मुझे ये क्या हसीं धोखा रहा है॥

लगे क्यों उससे मिलकर भी, कि, जैसे  
कोई दरिया से प्यासा जा रहा है।

किसी का साथ पाने की ललक में,  
कोई पहलू से खिसका जा रहा है॥

तमन्ना क्या थी इस नज़रे-तलब<sup>1</sup> की,  
ज़माना क्या इसे दिखला रहा है।

मेरी प्यासों के सहरा<sup>2</sup> तो इधर हैं,  
मगर दरिया किधर को जा रहा है?

वुजूद<sup>3</sup>, उसका निहाँ<sup>4</sup> क़तरे<sup>5</sup> के अन्दर,  
समुन्दर किसलिए इतरा रहा है??

1. याचक दृष्टि, 2. मरुस्थल, 3. अस्तित्व, 4. छिपा हुआ, 5. बूँद

लब<sup>1</sup> पे इक खुश्क-सी हँसी बन कर।  
ग़म नुमायाँ<sup>2</sup> हुआ खुशी बन कर॥

दर्दें-दिल झाँक लिया करता है,  
दीदए-खुशक<sup>3</sup> में नमी बन कर।

लोग हैवानियत से पेश आये,  
हमने देखा है आदमी बन कर॥

जी उठी है निजाते-ग़म<sup>4</sup> की उमीद,  
मौत आई है ज़िन्दगी बन कर।

जलना पड़ता चिराग को शब<sup>5</sup>-भर,  
तब चमकता है रोशनी बन कर॥

सफ<sup>6</sup> में हक़दार अव्वलीं<sup>7</sup> का है,  
वो जो बैठा है आखिरी बन कर।

1. होंठ, 2. प्रकट, 3. सूखी आँखें, 4. दुख से मुक्ति, 5. रात, 6. पंक्ति, 7. पहला नम्बर

कटी ज़िन्दगी आँसुओं के सहारे।  
कि, दिन उम्र के हमने रो-रो गुज़ारे।

हुए गुम सभी दोस्त-अहवाब<sup>1</sup> आखिर,  
कि, ज्यों रात ढलते ही झूबें सितारे ॥

मैं जितना सफ़ीने<sup>2</sup> को नज़दीक लाया,  
बढ़े और उतने ही आगे किनारे ।

मेरी बेकसी! तेरी हालत वो समझे,  
फ़त्ह<sup>3</sup> करते-करते जो बाज़ी को हारे ॥

हैं अब्रू<sup>4</sup> पे बल, तो लबों पर तबस्सुम<sup>5</sup>,  
भला कौन समझे ये मुबहम<sup>6</sup> इशारे?

हुई रायग़ाँ<sup>7</sup> आहो-फ़रियाद “शैदी”,  
बयाबाँ<sup>8</sup> में ज्यों कोई तन्हा<sup>9</sup> पुकारे ॥

1. मित्र, 2. नाव, 3. विजय, 4. भृकुटि, 5. मुस्कान, 6. अस्पष्ट, 7. व्यर्थ, 8. सुनसान जगह,
9. अकेला

उनकी नज़रों में मैं बेवफ़ा बन गया।  
बनना चाहा था क्या, और क्या बन गया?

फ़ायदा क्या दलीलों से मुंसिफ़<sup>1</sup> मेरे,  
आपका हुक्म जब फ़ैसला बन गया।

सब समझते हैं, मुश्किल सज़ा मौत की,  
हमको जीना भी मिस्ले-सज़ा<sup>2</sup> बन गया ॥

अज़म<sup>3</sup> था साथ में राहबर<sup>4</sup> की तरह,  
मैं जिधर भी चला, रास्ता बन गया ॥

संगसारी<sup>5</sup> में हासिल महारत<sup>6</sup> उसे,  
दिल तराशा हुआ आइना बन गया ॥

हो गई उनकी चारागरी<sup>7</sup> बेअसर,  
अब मरज़<sup>8</sup> ही मेरा, खुद दवा बन गया ॥

1. न्यायाधीश, 2. दंड की भाँति, 3. संकल्प, 4. पथप्रदर्शक, 5. पत्थरबाज़ी, 6. निपुणता,
7. चिकित्सा, 8. रोग

कशिश<sup>1</sup> गुलों में न बादे-सबा<sup>2</sup> में सिहरन है।  
खिज़ाँ-नसीब<sup>3</sup> ये कैसी बहारे-गुलशन है॥

चला रहे हों अँधेरे जहाँ हुक्मत को,  
वहाँ पे नूर<sup>4</sup> है मुज़रिम<sup>5</sup>, चिराग् दुश्मन है।

सियाही<sup>6</sup> छिप नहीं पायेगी उसके चेहरे की,  
भले ही हाथ में उसके, सुनहरा दरपन है॥

ख़्याल जिसने रखा है हवाओं के रुख का,  
उसी के हाथ में अब तक चिराग् रौशन है।

यकीं है, वो मुझे तिश्ना<sup>7</sup> ही छोड़ जायेगा,  
मैं मिस्ले-सहरा<sup>8</sup> ज़मीं पर, वो अब्रे-सावन<sup>9</sup> है॥

मचलता दिल है कभी, तितलियाँ पकड़ने को,  
कहीं ज़हन<sup>10</sup> में निहाँ<sup>11</sup>, अब भी दौरे-बचपन<sup>12</sup> है।

मैं जब भी चाहूँ, जुदा<sup>13</sup>, कर लूँ खुद को दुनिया से,  
हमारे दर्मियाँ इक बेखुदी<sup>14</sup> की चिलमन है।

ज़रा-सी ठेस से खुल जाये बारहा<sup>15</sup> “शैदी”,  
न जाने कैसी ये ज़ख्मे-जिगर<sup>16</sup> की तुरपन है।

1. आकर्षण, 2. प्रातःकालीन हवा, 3. पतझड़ के भाग्य वाली, 4. प्रकाश, 5. दोषी,
6. कालापन, 7. प्यासा, 8. मरुस्थल की भाँति, 9. सावन का बादल, 10. मस्तिष्क,
11. छिपा हुआ, 12. बाल्य-काल, 13. अलग, 14. आत्मविस्मृति, 15. बार-बार, 16. दिल का घाव

दिल सहमा है ग़म की भीड़ के रेले में।  
ज्यों कोई बच्चा खो जाये मेले में।

अपना ग़म है सहना तुम्हें अकेले में।  
कौन यहाँ है पड़ता किसी झमेले में॥

चोरों की बस्ती में रात वितानी है,  
मालो-ज़र<sup>1</sup> सब साथ लिये हैं थैले में।

दुनिया कितनी छोटी लगने लगती है,  
जब होते हैं दिल के साथ अकेले में॥

“शैदी” जिसने तोड़ा फूलों का गुच्छा,  
महक<sup>2</sup> बसी है उस मिट्टी के ढेले में॥

1. धन-दौलत, 2. गंध

दर्द दिल में मुसलसल<sup>1</sup> ही रहता तो है।  
साथ जो दे सके, कोई ऐसा तो है॥

धूप में हमसफर<sup>2</sup> है न कोई तो क्या,  
साथ चलता हुआ अपना साया तो है।

रात जाने लगी, पर न आया कोई,  
हर घड़ी कोई आया-सा लगता तो है॥

दिल को यूँ ही न बातों से बहलाइये,  
बोल सकता नहीं, पर, समझता तो है।

नातवानी<sup>3</sup> ने पाँवों को जकड़ा तो क्या?  
दिल में “शैदी” सफर की तमन्ना तो है॥

1. निरंतर, 2. सहयात्री, 3. दुर्बलता

पसन्द उनकी अदायें हैं, उनका नाम पसन्द।  
जो उनकी याद में बीतें, वो सुब्हो-शाम पसन्द ॥

बढ़ा जो राहे-मुहब्बत<sup>1</sup> में उनका गाम<sup>2</sup> पसन्द।  
वो उनकी राहगुज़र<sup>3</sup>, उनका हर मकाम<sup>4</sup> पसन्द ॥

हर एक जुल्म रखा<sup>5</sup>, उनका हर इक हुक्म कबूल,  
मुझे है उनकी हुकूमत<sup>6</sup> का हर निज़ाम<sup>7</sup> पसन्द ॥

हो दर्दे-दिल कि निशाते-हयात<sup>8</sup>, जो कुछ हो,  
खुशी से मुझको जो बख्त्रो, वो हर इनाम पसन्द ॥

ये सोचा बारहा<sup>9</sup>, दिल से भुला दें “शैदी” को,  
करें भी क्या कि है कम्बख्त का कलाम पसन्द ॥

1. प्रेम-मार्ग, 2. कटम, 3. यात्रा-पथ, 4. पड़ाव, 5. उचित, 6. शासन, 7. व्यवस्था,
8. जीवन-सुख, 9. बार-बार

ख़ाक में मिल के मेरा जिस्म<sup>1</sup> सँवर जायेगा।  
रेत के ढेर में, चाँदी-सा बिखर जायेगा ॥

काम आ जायेगी आखिर मेरी फ़रागदिली<sup>2</sup>,  
ग़म का दरिया<sup>3</sup> है, समुंदर में उतर जायेगा।

आइना सामने रखिये न फ़र्जदारी<sup>4</sup> का,  
चाहने वालों का चेहरा ही उतर जायेगा ॥

गर न रोकोगे अँधेरों की घनी साज़िश<sup>5</sup> को,  
फिर गहन<sup>6</sup> बन के कोई, चाँद कुतर जायेगा।

खौफ<sup>7</sup> मुंसिफ<sup>8</sup> से ज़ियादह है उसे, कातिल का,  
हक्कबयानी<sup>9</sup> से वो दानिस्ता<sup>10</sup> मुकर जायेगा ॥

1. शरीर, 2. उदारता, 3. नदी, 4. कर्तव्य-निर्वाह, 5. षड्यंत्र, 6. ग्रहण, 7. भय,
8. न्यायाधीश, 9. सत्य बोलना, 10. जान-बूझकर

न सोच, दिल में सुकूँ भी हो, ऐतबार भी हो ।  
हर इक चमन में ज़रूरी नहीं, बहार भी हो ॥

तेरे बगैर ये दिल बेक़रार रहता है,  
पर, ऐसा भी है नहीं, तेरा इन्तज़ार भी हो ।

शबे-फ़िराक़<sup>1</sup> में जलती रहे शम्भु-ए-उम्मीद<sup>2</sup>,  
दिले-शिकस्ता<sup>3</sup> को वादे पे ऐतबार<sup>4</sup> भी हो ॥

यही मैं सोच के, सूरज नया उगाऊँगा,  
न सिफ़ मेरा ही, रोशन तेरा दयार<sup>5</sup> भी हो ।

सबक़ सिखाया यही ज़िन्दगी का, पुरखों ने,  
शजर<sup>6</sup> वही है मुनासिब<sup>7</sup>, जो सायादार भी हो ॥

1. वियोग की रात, 2. आशा-दीप, 3. टूटा हुआ दिल, 4. विश्वास, 5. संसार, 6. पेड़,
7. योग्य

दहकता गाँव है, जलते घरों से ।  
मिलेगी कब निजात<sup>1</sup> इन मंज़रों<sup>2</sup> से ?

उसे शीशागरी<sup>3</sup> सिखलाओगे क्या ?  
जो खेला है हमेशा पत्थरों से ॥

बहस में मुब्तला<sup>4</sup> शेखो-बरहमन<sup>5</sup>,  
खुदा हमको बचाये सरफिरों से ।

ज़रा दिल की भी सुन लेने दे वाइज़<sup>6</sup>,  
हुए हैं तंग, बेजा मश्वरों<sup>7</sup> से ॥

तखैयुल<sup>8</sup> में ही, गो<sup>9</sup>, आते वो अक्सर,  
मगर आती है खुशबू बिस्तरों से ।

सँवरने की तमन्ना में बुतों<sup>10</sup> ने,  
मुसलसल<sup>11</sup> चोट खायी खंजरों से ॥

मेरी हस्ती का ही मंज़र है, गोया,  
परिन्दा<sup>12</sup> लड़ रहा है अजगरों से ।

तखैयुल<sup>13</sup> तक भी पोशीदा<sup>14</sup> नहीं है  
पसे-दीवार<sup>15</sup> बैठे मुखविरों<sup>16</sup> से ॥

1. मुक्ति, 2. दृश्य, 3. काँच का सामान बनाने की कला, 4. ग्रस्त, 5. मुल्ला-पंडित,
6. उपदेशक, 7. निरर्थक परामर्श, 8. कल्पना, 9. यद्यपि, 10. मूर्ति, 11. निरंतर, 12. पक्षी,
13. कल्पना, 14. गुप्त, 15. दीवार के पीछे, 16. गुप्तचर

तहज़ीबे-ग़म<sup>1</sup> में दर्द के पहलू नहीं रहे।  
रोते हैं, मगर, आँख में आँसू नहीं रहे॥

देखा न जाये, आरज़ूएँ खुदकुशी करें,  
बेहतर है, दिल में आरज़ू की ख़ू<sup>2</sup> नहीं रहे॥

शाने<sup>3</sup> फड़कने लगते हैं, तलवार देख कर,  
क्या हो गया, जो जिस्म पे बाज़ू नहीं रहे।

तस्वीर ही खिज़ाँ ने बदल दी है चमन की,  
हर सू थे फूल, आज किसी सू<sup>4</sup> नहीं रहे॥

ख्याहिश यही है दुश्मने-हुस्ने चमन<sup>5</sup> की अब,  
तितली में रंग, फूल में खुशबू नहीं रहे।

अहले-अदब<sup>6</sup> में गर्मी-ए-अहसास<sup>7</sup> क्या हुआ?  
अशआर<sup>8</sup> तो हैं, दिल को मगर छू नहीं रहे।

बज़मे-अदब<sup>9</sup> में शोर न तहसीनो-दाद<sup>10</sup> का,  
लगता है, वहाँ साहिबे-उर्दू<sup>11</sup> नहीं रहे।

“शैदी” कुछ इस कमाल का, किरदार<sup>12</sup> हो तेरा,  
महसूस हो कमी तेरी, जब तू नहीं रहे।

1. दुख में शिष्टता, 2. आदत, 3. कंधे, 4. ओर, 5. चमन के हुस्न के दुश्मन,
6. साहित्यकार, 7. अनुभूति की गर्मी, 8. शेर, 9. साहित्य-सभा, 10. प्रशंसा, 11. उर्दू के प्रशंसक, 12. भूमिका

शायद कि तसव्वुर<sup>1</sup> में है दिलदार का साया।  
हर सू<sup>2</sup> नज़र आता है मुझे प्यार का साया ॥

हल्की-सी इक उम्मीद रही दिल में, कि जैसे  
चिलमन<sup>3</sup> से झलकता हुआ, रुख़सार<sup>4</sup> का साया ।

आशिक है जो कमज़ोर, तो हल्का हो कफ़न भी,  
काफ़ी है, फ़क़त<sup>5</sup> दामने-दिलदार<sup>6</sup> का साया ॥

सुखीं की तलब<sup>7</sup>, ज़ेहन<sup>8</sup> पे हो जाती है हावी,  
किर्दार<sup>9</sup> बदल देता है, अख़बार का साया ।

उस नस्ल<sup>10</sup> की तक़दीर में ज़ालिम ही लिखे हैं,  
बचपन में मिला हो न जिसे, प्यार का साया ।

“शैदी” पे नज़र आता असर, फ़न<sup>11</sup> का अभी तक,  
उस पर भी रहा है किसी फ़नकार<sup>12</sup> का साया ।

1. कल्पना, 2. ओर, 3. तीलियों का पर्दा, 4. गाल, 5. केवल, 6. महबूब का आँचल,
7. इच्छा, 8. मस्तिष्क, 9. भूमिका, 10. वंश, 11. कला, 12. कलाकार

औरों पे रखा जिसने सदा, प्यार का साया।  
आज उसकी ही गर्दन पे है, तलवार का साया ॥

बल्लाह! हुआ क्या ये मेरे चारागरों<sup>1</sup> को?  
डरते हैं कि पड़ जाये न बीमार का साया ।

कृतिल<sup>2</sup> से मुझे जीने की मोहलत<sup>3</sup> तो मिली है,  
हर वक्त मगर सर पे है तलवार का साया ॥

इस घर में कोई हुस्न का पैकर<sup>4</sup> तो नहीं है?  
दीवार पे है गेसू-ए-ख़मदार<sup>5</sup> का साया ।

बेसूद<sup>6</sup> है मज़बूर की फैयाज़ दिली<sup>7</sup> भी,  
जैसे कि हो, गिरती हुई दीवार का साया ॥

इस शहरे-बदकलाम<sup>8</sup> से बच्चों को बचाना,  
उन पर कहीं पड़ जाये न गुफ्तार<sup>9</sup> का साया ।

1. चिकित्सक, 2. वधिक, 3. अवकाश, 4. सुंदर काया, 5. धुँधराले वाल, 6. निर्थक,
7. उदारता, 8. गाली बकने वालों का शहर, 9. बोली

ताज़गी गुल में, न कलियों में अदा बाकी है।  
बाग़बाँ<sup>1</sup>! तू ही बता, बाग़ में क्या बाकी है??

नूर<sup>2</sup> में जिसके था, परियों की कहानी का नगर,  
अब भी यादों में, वो मिट्टी का दिया बाकी है।

ख़त्म हो पाया नहीं सिलसिला सलीबों<sup>3</sup> का,  
हक़बयानी<sup>4</sup> की अभी और सज़ा बाकी है॥

ज़ालिमों ने अभी देखी है फ़क़त<sup>5</sup> महरे-खुदा<sup>6</sup>,  
उनसे कह दो कि अभी कहरे-खुदा<sup>7</sup> बाकी है।

सुब्ल तक दूर रहें, शब<sup>8</sup> के अँधेरों से कहो,  
अब भी इन बुझते चिरागों में ज़िया<sup>9</sup> बाकी है।

ले गया लूट के, सारा ही आसमाँ कोई,  
साँस लेता रहूँ, बस उतनी हवा बाकी है।

बाग़ के बाग़ उजाड़े हैं ख़िज़ाओं<sup>10</sup> ने, मगर,  
एक वो फूल, जो आँखों में खिला, बाकी है।

मुझको अहसास<sup>11</sup>, हथेली-सा नरम लगता है,  
मेरी आँखों में कहीं रंगे-हिना<sup>12</sup> बाकी है।

है अज़ब तर्के-मुहब्बत<sup>13</sup>, कि वस्ल<sup>14</sup> की, दिल में,  
छोड़ दी आस, मगर फिर भी, ज़रा बाकी है॥

उनको पाने की है उम्मीद, वो झूठी ही सही,  
कुछ तो हाथों की लकीरों का लिखा बाकी है।

आ गये दूर बहुत, ऐसी जगह पर कि जहाँ,  
हैं अजानें न हरम<sup>15</sup>, सिफ़ ख़ला<sup>16</sup> बाकी है ॥

1. माली, 2. प्रकाश, 3. सूली, 4. सच बोलना, 5. केवल 6. ईश्वर की कृपा, 7. ईश्वर  
का प्रकोप, 8. रात्रि, 9. प्रकाश, 10. पतझड़, 11. अनुभूति, 12. मेंहदी का रंग, 13. प्रेम  
का त्याग, 14. मिलन, 15. मंदिर, 16. अंतरिक्ष

कहने को क़दीमी<sup>1</sup> है ये सदियों का नगर है।  
पर, सच में ये गुमनाम-से रिश्तों का नगर है।।

फुटपाथ पे सोते हैं सभी लोग यहाँ पर,  
ये बे-दरो-दीवार मकानों का नगर है।

उस महल के लोगों ने किया कैद है सूरज,  
बाकी जो बचा है, वो अँधेरों का नगर है।।

हंसों को खबरदार करो, बच के रहें वो,  
पर नोंच न ले कोई, ये कौवों का नगर है।

दुनिया-ए-दिल को छोड़, यहाँ आये किसलिए?  
किससे करोगे बातें? ये गँगों का नगर है।।

रंगों का बयाँ किससे यहाँ आप कर रहे,  
इतना तो देख लीजिये, अंधों का नगर है।

होता हूँ पुरखुलूस<sup>2</sup>, तो करते हैं मुझपे शक,  
यारब<sup>3</sup>! ये किस मिज़ाज के लोगों का नगर है?

अक्सर ही दौड़ जाता उधर, सैर के लिये,  
आबाद मेरे दिल में जो यादों का नगर है।

कल अपनी ही बस्ती में गया घूमने, मगर,  
लगता था जैसे अजनबी लोगों का नगर है।

बच्चा वो सो रहा है, रखे सर किताब पर,  
अल्मारियों में कैद, खिलौनों का नगर है।

मुमकिन है, वहाँ भी न हो, इन्सानों की बस्ती,  
फिर्दौस<sup>1</sup> भी क्या? सिफ़ फ़रिश्तों का नगर है।

बेकार चले आये यहाँ ग़म को भुलाने,  
बहकाया है किसने कि, ये खुशियों का नगर है।

“शैदी” बस आपको ही नहीं ज़ौके-शायरी<sup>2</sup>,  
हैं और भी यहाँ, ये अदीबों<sup>3</sup> का नगर है॥

1. प्राचीन, 2. निश्छल, 3. हे ईश्वर, 4. स्वर्ग, 5. शायरी का शौक, 6. साहित्यकार

जो अहले-वफ़ा<sup>1</sup> हैं वो सितमगर<sup>2</sup> नहीं होते।  
अपनों के कभी हाथ में ख़ंजर नहीं होते।

दिल हमको दुखाना ही न आता है किसी का,  
आईनागर<sup>3</sup> के हाथ में पत्थर नहीं होते।

अपनी तो ज़िन्दगी है, खुली इक किताब-सी,  
कुछ लोग जो बाहर हैं, वो अन्दर नहीं होते॥

होने को तो होते हैं सभी काम जहाँ में,  
पर, हम जिन्हें चाहें, वो ही अक्सर नहीं होते।

लाचारी-ए-बुलबुल<sup>4</sup> तो कोई देखे क़फ़स<sup>5</sup> में,  
है हसरते-परवाज़<sup>6</sup>, मगर, पर<sup>7</sup> नहीं होते॥

क्यों हमसे मना करते हो, ज़ाहिद<sup>8</sup>! है चखी भी?  
देखी न डगर जिसने, वो रहबर<sup>9</sup> नहीं होते।

मर्ख्सूस<sup>10</sup> फ़क़त<sup>11</sup> कुछ ही, मुहब्बत के लिये दिल,  
गौहर<sup>12</sup> तो हर इक सीप के अन्दर नहीं होते॥

बुनियाद है शादी की, यक़ीं भी हो, वफ़ा भी,  
रस्मों से फ़क़त<sup>13</sup> बीवी-ओ-शौहर नहीं होते।

आँखों में हया<sup>14</sup>, शीरीं-जुबाँ<sup>15</sup> और वक़फे-दिल<sup>16</sup>  
ज़ेवर भी कोई इनसे हसींतर<sup>17</sup> नहीं होते॥

है फ़क़े-अमीरी-ओ-ग़रीबी तो अज़ल<sup>18</sup> से,  
कुद्रत<sup>19</sup> में सभी पेड़ बराबर नहीं होते।

हैं ढाल रहे “शैदी” सुखन<sup>20</sup> में ग़मे-हस्ती<sup>21</sup>,  
मर जाते कभी के जो सुखनवर<sup>22</sup> नहीं होते ॥

1. वफ़ादार, 2. अत्याचारी, 3. शीशे का कारीगर, 4. बुलबुल की विवशता, 5. पिंजड़ा,
6. उड़ने की इच्छा, 7. पंख, 8. संयमी, 9. पथ-प्रदर्शक, 10. विशेष, 11. केवल, 12. मोती,
13. केवल, 14. लाज, 15. मीठी जुबान, 16. मन का समर्पण, 17. अधिक सुन्दर,
18. अनादि काल, 19. प्रकृति, 20. शाइरी, 21. जीवन का दुख, 22. शाइर

कब तक रखूँ हिसाब, तेरी बेवफाई का?  
दिल दे भी क्या जवाब, तेरी बेवफाई का?

नामे-वफ़ा<sup>1</sup> जहाँ में नहीं मोतबर<sup>2</sup> रहे,  
शायद यही है ख्वाब, तेरी बेवफाई का।

आता न यूँ ही हमको यकीं हर किसी पे अब,  
मक़सद<sup>3</sup> है कामयाब, तेरी बेवफाई का।।

गो<sup>4</sup> खूँचकाँ<sup>5</sup> है, फिर भी मेरे दस्ते-शौक<sup>6</sup> में,  
काँटों भरा गुलाब, तेरी बेवफाई का।

सारा कुसूर है ये, मेरे दिल के ज़ख्म का,  
चेहरा जो बेनकाब, तेरी बेवफाई का।।

अपना ही दिल था, ज़ौरो-ज़फ़ा<sup>7</sup> सह गया तेरे,  
अच्छा था इन्तिख़ाब<sup>8</sup>, तेरी बेवफाई का।

मक़बूल<sup>9</sup> मेरा इश्क हुआ जिसकी वज़ह से,  
अफ़साना लाजवाब, तेरी बेवफाई का।।

दिल बेवफाई पर भी तुझे दाद दे रहा,  
लहजा<sup>10</sup> है लाजवाब, तेरी बेवफाई का।

दामन है उँगलियों पे, मेरा हाल देख कर,  
वल्लाह! क्या हिजाब<sup>11</sup>, तेरी बेवफाई का।।

रक़साँ<sup>12</sup> थीं आरजूएँ मेरी, बज़मे-शौक<sup>13</sup>, में,  
बजता रहा रबाब<sup>14</sup>, तेरी बेवफाई का।

“शैदी” खुदा करे कि रहे चश्मे-बद<sup>15</sup> से दूर,  
जल्वा<sup>16</sup> है पुरशबाब<sup>17</sup>, तेरी बेवफ़ाई का ॥

1. वफ़ा का नाम, 2. विश्वसनीय, 3. उद्देश्य, 4. यद्यपि, 5. रक्त टपकता हुआ, 6. प्रेम का हाथ, 7. अत्याचार, 8. चयन, 9. प्रसिद्ध, 10. ढंग, 11. पर्दा, 12. नृत्य-रत, 13. प्रेम-सभा, 14. एक प्रकार का साज़, 15. कुटूष्ठि, 16. सौन्दर्य, 17. यौवनपूर्ण

हौसला जब दिल के अन्दर हो गया।  
यूँ लगा, ज़रा<sup>1</sup> भी अख्तर<sup>2</sup> हो गया॥

पाँव के छाले भी अब दुखते नहीं,  
अब ये सहरा<sup>3</sup> ही मुकद्दर हो गया॥

कहकशाँ<sup>4</sup> की सैर को निकला तो हूँ  
लेकिन अपने घर से बेघर हो गया।

हुस्न जब निखरा तो रंगे-इश्क भी  
और बेहतर, और बेहतर हो गया॥

दिल में छाया ही था कुछ उसका ख़्याल,  
खुशनुमा<sup>5</sup> कैसा ये मंज़र<sup>6</sup> हो गया।

जब पड़ी उस पर अकीदत<sup>7</sup> की नज़र,  
देवता-जैसा वो पत्थर हो गया॥

उसने भी उम्मीद मुझसे छोड़ दी,  
अब हिसाब अपना बराबर हो गया।

कौन गुज़रा है अभी उस राह से?  
एक-एक ज़रा मुनव्वर<sup>8</sup> हो गया॥

1. कण, 2. सितारा, 3. रेगिस्तान, 4. आकाश-गंगा, 5. सुंदर, 6. दृश्य, 7. श्रद्धा,
8. प्रकाशमान

मुहब्बत आज़माना चाहते हैं।  
हम आईना दिखाना चाहते हैं॥

बुरा है हाल ब़ज़मे-ज़िन्दगी का,  
इसे फिर से सजाना चाहते हैं।

बहुत अच्छा है शहरे-दिल हमारा,  
इसे फिर से बसाना चाहते हैं॥

फ़साना<sup>1</sup> तो नया होगा हमारा,  
ज़माना, पर, पुराना चाहते हैं।

नयी हो रोशनी दुनिया-ए-नौ<sup>2</sup> में,  
नया सूरज उगाना चाहते हैं॥

उठे जिस तरह मुट्ठी बाँध कर वो,  
लगा, कुछ कर दिखाना चाहते हैं।

हैं कितने, जो निभा पायेंगे उसको,  
कसम तो सब ही खाना चाहते हैं॥

हवा के रुख़ पे भी रखिये निगाहें,  
दिये को गर जलाना चाहते हैं।

हसीं, बादल बहुत हैं, देखने में,  
मगर, बिजली गिराना चाहते हैं॥

1. कहानी, 2. नई दुनिया

एक हर शाख़ पे, गुल<sup>1</sup> की जगह हैं खार<sup>2</sup> बहुत।  
रहेगी याद हमें, अब की ये बहार बहुत॥

भले ही चश्म<sup>3</sup> हमारी न अश्कबार<sup>4</sup> बहुत।  
यकीन मानिये, हम भी हैं सोगवार<sup>5</sup> बहुत॥

जुनूने-शौक<sup>6</sup> पे आया हुआ निखार बहुत।  
गिरेवाँ<sup>7</sup> चाक है, दामन भी तार-तार बहुत॥

नज़र न आई ज़माने को खूबियाँ मेरी,  
जो खामियाँ<sup>8</sup> थीं, उन्हीं का किया शुमार<sup>9</sup> बहुत।

तमाम शहर में अपना ही बाग् ऐसा है,  
कि, जिसमें फूल तो कम हैं, मगर हैं खार बहुत॥

उन्हीं के नक्शे-कदम के हैं दाग् दामन पर,  
मुझे है नाज़ कि दामन है दागदार बहुत।

चमन में आ के, तबाही मचा गया कोई,  
खिला के गुल को, पशेमाँ<sup>10</sup> हुई बहार बहुत।

है साफ़गोई<sup>11</sup> कि ताना दिले-शिकस्ता<sup>12</sup> का,  
किसी भी शख्स पे कीजे न एतबार<sup>13</sup> बहुत।

तुम्हारे लालो-गुहर<sup>14</sup> भी न कोई पूछेगा,  
विकेंगे संग भी महँगे ब-इश्तहार<sup>15</sup>, बहुत॥

हैं कितने लोग? सलीका<sup>16</sup> हैं जिनको पीने का,  
हैं तेरी बज्म<sup>17</sup> में, कहने को, बादाख्यार<sup>18</sup> बहुत।

उन्हीं को सौंप रखी है अवाम<sup>19</sup> ने वस्ती,  
कि जिनको मौत का मंज़र है खुशग़्वार<sup>20</sup> बहुत ॥

ग़रीबे-शहर<sup>21</sup> से कह दो, कहीं चला जाये,  
हमारे शहर में रहते हैं बावक़ार<sup>22</sup> बहुत ।

उन्हें भी ठोकरें देती है बारहा<sup>23</sup> दुनिया,  
जो लोग खुद को समझते हैं दुनियादार बहुत ॥

हवाएँ-वक़्त<sup>24</sup> सभी को गिरा गई आखिर,  
दरख़त<sup>25</sup> राहगुज़र<sup>26</sup> में थे सायादार बहुत ।

अजब-सा ख़ौफ़<sup>27</sup> है दैरो-हरम<sup>28</sup> की वस्ती में,  
वहीं पे जाये शिकारी, जहाँ शिकार बहुत ॥

था जिनको ज़ौके-अदब<sup>29</sup>, फ़िक्रे-सुखन<sup>30</sup> से निस्वत<sup>31</sup>,  
उन्हें सताता रहा फ़िक्रे-रोज़गार<sup>32</sup> बहुत ।

तमाम उम्र भी कम है समेट लेने को,  
हुआ है हस्ती-ए-“शैदी”<sup>33</sup> का इंतशार<sup>34</sup> बहुत ॥

1. फूल, 2. काँटे, 3. आँख, 4. अश्रुमय, 5. दुखी, 6. प्रेमोन्माद, 7. कुर्ते का गला,
8. कमियाँ, 9. गिनती, 10. लज्जित, 11. स्पष्टवादिता, 12. टूटा दिल, 13. विश्वास,
14. हीरे-मोती, 15. विज्ञापन ढारा, 16. शिष्टाचार, 17. महफ़िल, 18. शराबी, 19. जनता,
20. आनन्ददायक, 21. नगर के निर्धन, 22. प्रतिष्ठित लोग, 23. बार-बार, 24. समय  
की आँधी, 25. पेड़, 26. यात्रा-पथ, 27. भय, 28. मंदिर-मस्ज़िद, 29. साहित्य-प्रेम,
30. शायरी की चिन्ता, 31. सम्बन्ध, 32. आजीविका की चिन्ता, 33. ‘शैदी’ का जीवन,
34. विखराव

तुम्हारी बात का कैसे हो ऐतबार<sup>1</sup> बहुत?  
क़रार<sup>2</sup> करके भी करते हो बेक़रार<sup>3</sup> बहुत ॥

हमारे दिल को रहा जिसपे ऐतबार बहुत ।  
उसी ने हमको दग़ा<sup>4</sup> दी है बार-बार बहुत ॥

ये माना हमको नहीं उनपे ऐतबार बहुत ।  
किया है फिर भी मगर उनका इंतज़ार बहुत ॥

ये मत समझिये, फ़क़त<sup>5</sup> दिल है उनके काबू में,  
हमारी जाँ पे भी उनको है इख्तियार<sup>6</sup> बहुत ।

जो मुस्तकिल<sup>7</sup> हमें दिल से भुलाये बैठा है,  
उसी को याद किया दिल ने बार-बार बहुत ॥

सुरूर<sup>8</sup> देते हैं अब तक विसाल के लम्हे<sup>9</sup>,  
ये क्या नशा था कि जिसका रहा खुमार बहुत ।

हैं बेशुमार<sup>10</sup> तमन्नाएँ हर घड़ी दिल में,  
ये वो मकान हैं जिसके किरायेदार बहुत ॥

गुहर<sup>11</sup> ये अश्क<sup>12</sup> के लौटा रहा हूँ किस्तों में,  
मता-ए-ग़म<sup>13</sup> का है सर पर चढ़ा उधार बहुत ।

न काम आई मुहब्बत में उसकी दिलदारी,  
हम अपने दिल को समझते थे होशियार बहुत ॥

मुझे है नाज़ कि मेरा ही इंतिख़ाब<sup>14</sup> किया,  
तुम्हारी बज़म<sup>15</sup> में यूँ तो थे जाँनिसार<sup>16</sup> बहुत ।

हमारे सामने क्या दिल की बात करते हो?  
हमारी जाँ पे भी तुमको है इखिलयार बहुत ॥

1. विश्वास, 2. प्रतिज्ञा, 3. बेचैन, 4. धोखा, 5. केवल, 6. अधिकार, 7. स्थायी रूप से,
8. हल्का नशा, 9. मिलन के क्षण, 10. असंख्य, 11. मोती, 12. आँसू, 13. दुख की पूँछी,
14. चयन, 15. महफिल, 16. प्राण न्यौछावर करने वाले

रोज़ शब-भर है जिसकी हमदम, नींद।  
उसको अमरित से भी है क्या कम नींद॥

रंजो-ग़म दूर भाग जाते हैं,  
आये लहरा के जब भी परचम<sup>1</sup>, नींद॥

बेक़रारी के ज़रूर भर जायें,  
जब लगाती है आके मरहम, नींद॥

बेल-बूटे हसीन ख्वाबों के,  
एक फ़नकार<sup>2</sup> से है क्या कम, नींद॥

तैरते ख्वाब के शिकारे<sup>3</sup> जब,  
लगने लगती है मिस्ले-झेलम<sup>4</sup> नींद॥

झील-जैसी उनींदी आँखों में,  
नाज़नीं-सी उतरती थम-थम, नींद॥

बेखुदी भी, रवाँ हैं साँसें भी,  
ज़िन्दगी-मौत का है संगम, नींद॥

“मीर” टुक<sup>5</sup> सो गये जो रो-रो कर,  
ले गई साथ अपने कुछ ग़म, नींद॥

बेवफ़ा हो गयी है अब “शैदी”,  
थी हमारी कभी जो हमदम, नींद॥

1. ध्वज, 2. शिल्पी, 3. नाव, 4. झेलम नदी की भाँति, 5. थोड़ा-सा

कुछ आँसुओं के दाग भी हैं, खुशबुओं के साथ ।  
सब कुछ रखा सँभाल के, तेरे ख़तों के साथ ॥

झूबा हूँ तेरी याद के सागर में जब कभी,  
उभरा तेरा ख्याल, नये पहलुओं के साथ ॥

रसमे-तकल्लुफ़ात<sup>1</sup> न हमसे निवाहिये,  
ऐसी भी क्या अदा कि मिलो दूरियों के साथ ।

मंज़िल पे लेके जायें जो, नफ़रत की राह से,  
मुझको सफ़र क़बूल न, उन रहवरों<sup>2</sup> के साथ ॥

बदला है वक़्त, खुद को भी, नासेह<sup>3</sup> ! बदल ज़रा,  
कव तक सुनेंगे तुझको, उन्हीं मश्वरों<sup>4</sup> के साथ ।

बेजान वही आज ज़मीं पर पड़े हुए,  
नापे थे आसमान कई, जिन परों के साथ ॥

दीवारें पत्थरों की हैं, शीशे जड़ी हुई,  
शीशों की उम्र कट रही है, पत्थरों के साथ ।

अहसासे-कमतरी<sup>5</sup> न उभरने दिया कभी,  
मुद्रदत से रहते आये हैं कददावरों<sup>6</sup> के साथ ॥

बस देखते ही आपने तो फेर ली नज़र,  
हम कब से जी रहे हैं, इन्हीं मंज़रों<sup>7</sup> के साथ ।

1. शील-संकोच की प्रथा, 2. पथ-प्रदेशक, 3. उपदेशक, 4. परामर्श, 5. हीन-भावना,
6. लंबे-चौड़े व्यक्ति, 7. दृश्य

बदल जाते हैं रस्ते लम्हे<sup>1</sup>-भर में।  
मक़ाम<sup>2</sup> ऐसे भी आते हैं सफर में।।

मिला मौक़ा तो हो जायेंगे ज़ाहिर,  
छिपे हैं आग के दरिया शरर<sup>3</sup> में।

बुलन्दी<sup>4</sup> पर जिन्हें हमने बिठाया,  
बुलन्द हम ही नहीं उनकी नज़र में।।

सुकूँ<sup>5</sup> देती हैं तनहाई में यादें,  
हो जैसे छाँव, जलती दोपहर में।।

छिपा लेते हैं अश्कों<sup>6</sup> के समुन्दर,  
महारत<sup>7</sup> हमको हासिल इस हुनर में।।

जुनूँ<sup>8</sup> के कुछ सबक<sup>9</sup> ऐसे हैं, जिनसे  
बदल जाता है इन्साँ, जानवर में।

अदावत<sup>10</sup> के लिए घर और हूँड़ो,  
मुहब्बत रह रही है दिल के घर में।।

सितमगर<sup>11</sup> ने सितम से की है तौबा,  
हकीक़त कम लगे हैं इस खबर में।

1. क्षण, 2. पड़ाव, 3. चिंगारी, 4. ऊँचाई, 5. शांति, 6. आँसू, 7. निपुणता, 8. उन्माद,
9. पाठ, 10. शत्रुता, 11. अत्याचारी

वो मेरी आँख से मंसूब<sup>1</sup>, ख्वाब जैसा था।  
अँधेरी रात में इक माहताब<sup>2</sup> जैसा था ॥

मेरी हयात<sup>3</sup> थी काँटों के एक पौधे-सी,  
वो मेरी शाख पे खिलता गुलाब जैसा था।

वो मेरे साथ ही एहसास<sup>4</sup> के मकाँ में रहा,  
था बानकाब<sup>5</sup> मगर बेहिजाब<sup>6</sup> जैसा था ॥

तेरी नज़र की कमी थी जो पढ़ सका न मुझे,  
वगर्ना<sup>7</sup> मैं तो खुली इक किताब जैसा था।

ज़माना देखने पाया न दाग चेहरे का,  
वो मेरे रुख<sup>8</sup> पे पड़ा इक निकाब<sup>9</sup> जैसा था।

जो मेरा झूठ था, मुसिफ़<sup>10</sup> ने सच उसे माना,  
वो मेरे साथ, मुकद्दस किताब<sup>11</sup> जैसा था ॥

वो मुझपे छाया रहा उम्र-भर, नशा बन कर,  
मैं एक रिन्द<sup>12</sup> था और वो शराब जैसा था।

तुम्हारी नींद अलहदा<sup>13</sup> थी मेरी नींदों से,  
तुम्हारा ख्वाब मगर मेरे ख्वाब जैसा था ॥

मुझे तो जाना ज़माने ने उसकी निस्वत<sup>14</sup> से,  
वो मेरे द्वास्ते “शैदी” ख़िताब<sup>15</sup> जैसा था।

1. सम्बद्ध, 2. चंद्रमा, 3. जीवन, 4. अनुभूति, 5. पर्दायुक्त, 6. वेपर्दा, 7. वर्ना, 8. चेहरा,
9. पर्दा, 10. न्यायाधीश, 11. पवित्र ग्रंथ, 12. पियक्कड़, 13. अलग, 14. संबंध,
15. उपाधि

आओ बातें करें उस ज़माने की अब।  
उम्रे-गुस्ताख़<sup>1</sup> की, जो न आने की अब॥

याद आते हैं रह-रह के वो दिन हमें,  
लाख कोशिश करें भूल जाने की अब।

वो शबे-वस्त्ल<sup>2</sup>, नादानियाँ, शोखियाँ,  
याद करता है दिल, किस ज़माने की अब॥

तुम भी वाकिफ़<sup>3</sup> हो, शिकवा<sup>4</sup> हमें भी नहीं,  
क्या ज़रूरत है झूठे बहाने की अब।

पिछली रंजिश<sup>5</sup> की बातें, वो शिकवे-गिले<sup>6</sup>,  
आओ, कोशिश करें भूल जाने की अब॥

शेर हर सू<sup>7</sup> बहारों के आने का है,  
खैरियत माँगिये आशियाने<sup>8</sup> की अब।

दोस्तो! ये नहीं आखिरी हिचकियाँ,  
हम क़सम खा रहे, फिर न आने की अब॥

रुख कफ़न से है “शैदी” ढँका किसलिए?  
क्या घड़ी आ गयी मुँह छिपाने की अब।

1. धृष्ट आयु, 2. मिलन रात्रि, 3. परिचित, 4. शिकायत, 5. मनुमुटाव, 6. शिकायतें, 7. ओर, 8. घोंसला

अब न दिन ही रहे वो, न मौसम रहे।  
दिल बहलने के सामाँ भी अब कम रहे।

है उमस तो बहुत, पर न बरसी घटा,  
ग्रम में लाज़िम<sup>1</sup> नहीं, आँख भी नम रहे॥

सिर्फ़ फूलों के ही हम न मश्कूर<sup>2</sup> हैं,  
हम पे काँटों के अहसाँ भी क्या कम रहे।

लुत्फ़<sup>3</sup> आने लगा है ख़्लिश<sup>4</sup> में भी अब,  
ज़ख्म अपने न मोहताज़े-मरहम<sup>5</sup> रहे॥

दो जुदागाना<sup>6</sup> मौसम, मगर साथ हैं,  
ख़ख़ पे खुशियाँ रहें, दिल में मातम रहे।

दिल ज़माने ने तोड़ा बहुत बारहा<sup>7</sup>,  
फिर भी हम थे, उसूलों पे कायम रहे॥

उस जहाँ में फ़क़त<sup>8</sup> जिस्म ही जिस्म हैं,  
उम्र-भर यूँ ही दिल ढूँढ़ते हम रहे।

चन्द<sup>9</sup> लम्हों<sup>10</sup> की खुशियाँ हैं “शैदी” मेरी,  
जैसे फूलों के दामन में शवनम रहे॥

1. आवश्यक, 2 आभारी, 3. आनंद, 4. टीस, 5. मरहम के आकांक्षी, 6. भिन्न-भिन्न,
7. बार-बार, 8. केवल, 9. कुछ ही, 10. क्षण

चिराग़ दिल में मुहब्बत का खुद ही जलता है।  
ये साज़ वो, जो बजाये बिना ही बजता है ॥

तेरे ख़्याल से महका हुआ तसव्वुर<sup>1</sup> है,  
कहाँ पे गुल ये खिला है, कहाँ महकता है ॥

तेरा मिज़ाज तो अनपढ़ के हाथ का ख़त है,  
नज़र तो आता है, मतलब कहाँ निकलता है?

भटक रहा हूँ मैं दुश्वारियों<sup>2</sup> के जंगल में,  
यहीं कहीं से मेरा रास्ता निकलता है ॥

फड़कने लगती हैं क्यों, बाजुएँ हवाओं की,  
चिराग़ जब भी मेरे हौसले का जलता है ।।

किसी के हिस्से में आई है धूप की दौलत,  
कोई है जो कि उजाले को भी तरसता है ॥

वहाँ भी खौफे-खिज़ाँ<sup>3</sup> है बहार पर तारी<sup>4</sup>,  
कहाँ चमन में भी रह कर, सुकून<sup>5</sup> मिलता है?

मैं अपने गाँव में जिस घर को छोड़ आया था,  
वो ख़स्ताहाल<sup>6</sup>, मुझे अब भी याद करता है ॥

बना हुआ है जुबाँ जो, उदास आँखों की,  
वो अश्क<sup>7</sup> सब्र<sup>8</sup> के पहलू से, कब निकलता है?

1. कल्पना, 2. कठिनाइयाँ, 3. पतझड़ का भय, 4. व्याप्त 5. शांति, 6. दुर्दशाग्रस्त, 7. आँसू,
8. धैर्य

जब चरागों को तजल्ली<sup>1</sup> का नशा हो जाये।  
दिल से फिर खौफ़ हवाओं का हवा हो जाये ॥

मोतबर<sup>2</sup> इतना मेरा दस्ते-दुआ<sup>3</sup> हो जाये।  
जो दुआ माँगूँ तो मंजूरे-खुदा<sup>4</sup> हो जाये ॥

यादे-माजी<sup>5</sup> के समुन्दर पे धुआँ-सा क्यूँ है?  
फिर कहीं दर्द का बादल न घना हो जाये ॥

वारहा<sup>6</sup> आह मेरी गुम हुई ख़लाओं<sup>7</sup> में,  
ज्यों अँधेरों में कोई साया, फ़ना<sup>8</sup> हो जाये ॥

ग़ुक़<sup>9</sup> कर के ही रहेगा ये सफ़ीने<sup>10</sup> का शिगाफ़<sup>11</sup>,  
चाहे कितनी भी मुआफ़िक<sup>12</sup> ये हवा हो जाये ॥

अब तो कुछ यूँ ही नज़र आये मुझे अपना नसीब<sup>13</sup>,  
चाहने वाला कोई जैसे ख़फ़ा<sup>14</sup> हो जाये ॥

इबते-इबते बतला गया हमे सूरज,  
रौशनी कैसे अँधेरों में फ़ना हो जाये ॥

मौत आयी है निजाते-ग़मे-हस्ती<sup>15</sup> देने,  
जान दे दूँ तो मेरा हक़ भी अदा हो जाये ॥

इस क़दर ज़ीस्त<sup>16</sup> से वेज़ार<sup>17</sup> हुआ है वो बशर<sup>18</sup>,  
दे ज़हर भी कोई उसको तो दवा हो जाये ॥

1. प्रकाश, 2. विश्वसनीय, 3. दुआ के लिये उठा हाथ, 4. ईश्वर को स्वीकार्य, 5. अतीत की याद, 6. वार-वार, 7. अंतरिक्ष, 8. नष्ट, 9. दुबोना, 10. नाव, 11. दरार, 12. अनुकूल, 13. भाग्य, 14. रुष्ट, 15. जीवन के दुःखों से मुक्ति, 16. जीवन, 17. निराश, 18. व्यक्ति

वाबस्ता<sup>1</sup> नहीं अपना सफर, रहगुज़र<sup>2</sup> के साथ।  
खुलते हैं नये रास्ते अपने, सफर के साथ॥

शिकवा<sup>3</sup> ये रहज़नों<sup>4</sup> से सिवा<sup>5</sup>, हमसफर<sup>6</sup> से है,  
लूटा जो ऐतबार<sup>7</sup> भी, असवाबो-ज़र<sup>8</sup> के साथ।

हैराँ था उसकी सुस्त-सी परवाज़<sup>9</sup> देख कर,  
लाज़िम<sup>10</sup> है हौसला भी यकीनन, हुनर के साथ॥

इन्साँ की क्या बिसात<sup>11</sup> है, इन्सानियत बगेर?  
कीमत सदफ<sup>12</sup> की है भी अगर, तो गुहर<sup>13</sup> के साथ।

अपनी अना<sup>14</sup> पे आखिरश<sup>15</sup>, इतना यकीं तो है,  
दस्तार<sup>16</sup> जायेगी भी, तो जायेगी सर के साथ॥

शते<sup>17</sup> नहीं कुबूल मुहब्बत के वास्ते,  
रिश्ता भी क्या वो? जो हो अगर और मगर के साथ।

तहरीर<sup>18</sup> क्या नसीब की है यह लिखी हुई,  
जो पढ़ रही है ज़िन्दगी, ज़ेरो-ज़बर<sup>19</sup> के साथ॥

ज़ालिम के मुहल्ले का पता पूछ रही हैं  
आई हैं इन्क़िलाबी हवाएँ, शरर<sup>19</sup> के साथ।

1. सम्बद्ध, 2. यात्रा-पथ, 3. शिकायत, 4. लुटेरे, 5. अधिक, 6. सहयात्री, 7. विश्वास,
8. सामान और धन, 9. उड़ान, 10. आवश्यक, 11. सामर्थ्य, 12. सीप, 13. मोती,
14. अहम, 15. अंततः, 16. पगड़ी, 17. लिखावट, 18. अस्त-व्यस्त, 19 चिंगारी

सब हदें<sup>1</sup> दिल के समुन्दर की तोड़ डाली हैं।  
हम वो रोये हैं कि आँखें निचोड़ डाली हैं॥

जिनपे खिलने थे कभी गुल मेरी उमीदों के,  
उसने नाजुक-सी वो शाखें मरोड़ डाली हैं।

था जुनूँ<sup>2</sup> या कि मसीहाई<sup>3</sup> का वो दावा था,  
जाने क्या सोच के लाशें झिंझोड़ डाली हैं॥

हो गई हमसे मुखालिफ़<sup>4</sup> नज़र ज़माने की,  
कुछ रवायात<sup>5</sup> थीं, जो हमने तोड़ डाली हैं।

जब न थी बूँद भी आबे-हयात<sup>6</sup> की “शैदी”,  
क्यों तमन्नाओं की लाशें झिंझोड़ डाली हैं?

1. सीमाएँ, 2. उन्माद, 3. दैवी चिकित्सा, 4. विरुद्ध, 5. परंपराएँ, 6. अमृत

तासीरे-इश्क<sup>1</sup> क्या है, उन्हें कुछ खबर नहीं।  
यह भी है क्या असर, जो इधर है, उधर नहीं ॥

पासे-अदब<sup>2</sup> ने दस्ते-तलब<sup>3</sup> रोक ही लिया,  
दिल में भले ही “हाँ” है, लबों पर मगर “नहीं” ।

दिल छोड़ के जाएँ तो कहाँ जायें रंजो-ग्रम?  
यह उनकी मिल्कियत<sup>4</sup> है, किराये का घर नहीं ॥

दागे-लहू<sup>5</sup> जहाँ न मिले, ऐ मुसाफिरो!  
छाले गवाह हैं, वो मेरी रहगुज़र नहीं ।

मद्धाहे-रंगो-बू<sup>6</sup> न हमें आज तक मिला,  
जंगल में खिल रहे हैं, कोई दीदावर<sup>7</sup> नहीं ।

कासिद<sup>8</sup> ने है कहा तो, लगा है वो आएँगे,  
पर, कहता तज्जिबा<sup>9</sup> कि ख़बर मोतबर<sup>10</sup> नहीं ।

इन्सान की औक़ात<sup>11</sup> जो दौलत से नापते,  
मैयार<sup>12</sup>, उनकी सोच में, ऐबो-हुनर<sup>13</sup> नहीं ॥

हर राहगीर के लिये वज्हे-सुकून<sup>14</sup> है,  
नफ़रत मिज़ाज<sup>15</sup>, बाग में, कोई शजर<sup>16</sup> नहीं ।

“शैदी” न जिसमें यादे-सनम<sup>17</sup> हो, न दर्द हो,  
वो दिल भी दिल नहीं, वो जिगर भी जिगर नहीं ॥

1. प्रेम का प्रभाव, 2. शिष्टता का भाव, 3. इच्छा का हाथ, 4. स्वामित्व वाला स्थान,
5. खून के धब्बे, 6. रंग और गंध का प्रशंसक, 7. दर्शक, 8. पत्रवाहक, 9. अनुभव,
10. विश्वसनीय, 11. प्रतिष्ठा, 12. कसौटी, 13. गुण-दोष, 14. शांति का कारण, 15. घृणा के स्वभाव वाला, 16. पेड़, 17. प्रिय की याद

ख़ाली मुसाफिरों से मेरी रहगुज़र<sup>1</sup> नहीं।  
पर ये भी सच है, कोई शरीके-सफ़र<sup>2</sup> नहीं॥

मेरी तबाहियों<sup>3</sup> पे अभी यूँ तरस न खा,  
तिनके ही आशियाँ<sup>4</sup> के जले, बालो-पर<sup>5</sup> नहीं।

राहें तलाशता हूँ नई अपने वास्ते,  
चलते हैं जिसपे सब, वो मेरी रहगुज़र नहीं॥

गिर पाये हम न दौर<sup>6</sup> की निचली हदों तलक,  
लाखों हुनर<sup>7</sup> हैं हम में, मगर, यह हुनर नहीं।

हो जाये जिसको सुन के मेरा दोस्त शर्मसार<sup>8</sup>,  
वो बात कह तो दूँ मैं, कहूँगा मगर नहीं॥

दरअस्ल कम नहीं हैं किसी लालो-गुहर<sup>9</sup> से,  
वे लोग, जिनको ख्याहिशे-लालो-गुहर<sup>10</sup> नहीं॥

अख़बार में जो सुर्खियाँ हैं आजकल, वो सब,  
रंगीन तो बहुत हैं, मगर मोतबर<sup>11</sup> नहीं।

फुटपाथ से है देख रहा कोठियों की सिम्त<sup>12</sup>,  
वो बदनसीब, जिसके मुक़द्र में घर नहीं।

“शैदी” कहाँ वो तावे-जिगर<sup>13</sup>, हौसला-ए-दिल,  
अब दिल वो दिल नहीं, वो जिगर भी जिगर नहीं॥

1. यात्रा-पथ, 2. सहयात्री, 3. बर्बादी, 4. घोंसला, 5. बाल और पंख, 6. समय, 7. कला,
8. शर्मिन्दा, 9. हीरा-मोती, 10. हीरा-मोती की इच्छा, 11. विश्वसनीय, 12. ओर,
13. मानसिक शक्ति

आइन्दा<sup>1</sup> क्या बनेगा, किसी को ख़बर नहीं।  
बच्चा जो वालिदैन<sup>2</sup> के ज़ेरे-असर<sup>3</sup> नहीं।।

कुनबे की आबरू<sup>4</sup> का सभी को खयाल है,  
ईसार<sup>5</sup> देखिए तो किसी में मगर नहीं।।

दिन-रात वक़्त काटता है दोस्तों में वो  
कहने को महल भी है, प<sup>6</sup> रहने को घर नहीं।।

ये बदशऊर<sup>7</sup> औरतें, बच्चे भी बेअदब<sup>8</sup>,  
होगा किसी अमीर का, ये मेरा घर नहीं।।

रिश्तों की आबरू<sup>9</sup> है, वहीं कुछ बची हुई,  
बच्चों पे वालिदैन<sup>10</sup> जहाँ मुन्हसर<sup>11</sup> नहीं।।

बच्चो! वतन की आबरू<sup>12</sup> रखना सँभाल के,  
यह अपनी मिल्कियत<sup>13</sup> है, किराये का घर नहीं।।

हर वक़्त घर में दोपहर की धूप ही मिली,  
किस्मत में अपनी रौनके-शामो-सहर<sup>14</sup> नहीं।।

साहिल<sup>15</sup> पे बेहिसी<sup>16</sup> से समुन्दर ने फैंक दीं,  
वो सीपियाँ, कि कोख में जिनके गुहर<sup>17</sup> नहीं।।

यकसाँ<sup>18</sup> है सब पे साया, मुसल्माँ हो कि हिन्दू  
पाबन्दे-रंगो-नस्ल<sup>19</sup> कोई भी शजर<sup>20</sup> नहीं।।

“शैदी”की शायरी में कहाँ अब जवानियाँ?  
दिल भी वो दिल नहीं, वो जिगर भी जिगर नहीं।।

1. भविष्य में, 2. माँ-बाप, 3. प्रभाव में, 4. प्रतिष्ठा, 5. त्याग, 6. पर, 7. अशिष्ट,
8. असम्भ्य, 9. इज़्ज़त, 10 माता-पिता, 11. निर्भर, 12. प्रतिष्ठा, 13. स्वामित्व वाला स्थान,
14. प्रातः-संध्या की रौनक, 15. किनारा, 16. चेतना हीनता, 17. मोती, 18. एक समान,
19. रंग और वंश का भेद मानने वाला, 20. पेड़

तारों के इर्द-गिर्द<sup>1</sup>, नज़ारों के दर्मियाँ<sup>2</sup>।  
दूँढ़ा है तुझको मैंने, न जाने कहाँ-कहाँ ॥

बाहर निकल के आ नहीं सकती हैं ख़ामियाँ<sup>3</sup>।  
महफूज<sup>4</sup> हों निगाह में जब उनकी खूबियाँ<sup>5</sup> ॥

शायद पता चला है मेरा हाले-ज़ार<sup>6</sup> उन्हें,  
तेवर बदल के बोल रहे मेरे हमजुबाँ<sup>7</sup> ॥

सदियाँ गुज़ारनी हैं किसे इस जहान में?  
दो-रोज़ा ज़िन्दगी के लिये इतने इम्तहाँ ॥

गुलचीं<sup>8</sup> ने फ़स्ले-गुल<sup>9</sup> में ही वीराँ किया चमन,  
हमने बड़ी उमीद से बदला है बाग़बाँ<sup>10</sup> ।

क्यों कर रहे हैं आग के शोलों का इंतज़ार?  
इस पर भी गौर कीजिये, क्यों उठ रहा धुआँ??

हैरत<sup>11</sup> से तक रहा था वो बज़्मे-निशात<sup>12</sup> को,  
रौशन कहाँ चिराग़ थे, तारीकियाँ<sup>13</sup> कहाँ ।

क्या हाल उसे बताऊँ मैं, उसको है सब ख़बर,  
जुंबिश<sup>14</sup> लबों<sup>15</sup> में ही है, न खुलती मेरी जुबाँ ॥

1. आस-पास, 2. मध्य, 3. कमियाँ, 4. सुरक्षित, 5. अच्छाइयाँ, 6. कष्टमय दशा, 7. साथी,
8. फूल चुनने वाला, 9. बहार, 10. माली, 11. आश्चर्य, 12. आमोद-प्रमोद की महफ़िल,
13. अंधकार, 14. कंपन, 15. होंठ

अनुभव प्रकाशन  
द्वारा प्रकाशित  
श्री ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी'  
की  
अन्य पुस्तकें

**दोहा, ग़ज़ल व नज़म संग्रह**  
तिराहे पर खड़ा दरख़्त (1997) मूल्य : 80.00

**दोहा संग्रह**  
संध्या मले गुलाल (2018) मूल्य : 150.00  
मन हो गया कबीर (2018) मूल्य : 150.00

**ग़ज़ल संग्रह**  
चुग़ली खाये रोशनदान (2018) मूल्य : 150.00  
प्यास का दरिया (2018) मूल्य : 150.00  
घर सरहद पर (2018) मूल्य : 150.00

**गीत संग्रह**  
मोरपंखी स्वर हमारे (2018) मूल्य : 150.00  
इन्द्रधनुषी दौर अपने (2018) मूल्य : 150.00

## लेखक परिचय

नाम : ब्रज किशोर वर्मा 'शैदी'

जन्म : ३ जून १९४१, अलीगढ़ (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.एस-सी (गणित), एम.फिल.

भाषा ज्ञान : हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, ब्रजभाषा,  
रशियन, सर्बियन व क्रोएशियन



प्रकाशित पुस्तकें :

- (१.) कृतआत संग्रह : 'मयखाना' (डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' की 'मधुशाला' के छंद में), प्रकाशन वर्ष १९६३
- (२.) गीत संग्रह : 'मोरपंखी स्वर हमारे', 'इन्द्रधनुषी दौर अपने'
- (३.) दोहा संग्रह : 'हम जंगल के फूल', 'संध्या मले गुलाल', 'मन हो गया कबीर'
- (४.) गुज़ल संग्रह : 'चुग्ली खाये रोशनदान', 'प्यास का दरिया', 'घर सरहद पर'
- (५.) नज़्म संग्रह : 'तज्जिबाते-इश्क', 'दर-दर की ठोकरें', 'खुशबुओं के साये',  
'अंदाज़े-बयाँ और'
- (६.) दोहा-गुज़ल-नज़्म समवेत संग्रह : 'तिराहे पर खड़ा दरख़त'
- (७.) मसनवी : 'नाग़फनी का गुलदस्ता'
- (८.) हास्य व्यंग्य : 'तुकी बेतुकी', 'तू-तू मैं-मैं'
- (९.) बालगीत : 'चूहे की शादी'
- (१०.) संस्मरण : 'वर्मा खानदान के सौ वर्ष'
- (११.) शोध-ग्रंथ : 'युगोस्लाव भाषाओं में भारत संबंधी रचनायें व अनुवाद'।

संपादित संग्रहों में सहभागिता :

- (क) दोहे : 'सप्तपदी' खंड-१ (सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'), 'समकालीन दोहे' (सं. इसाक अश्क), 'समकालीन दोहा कोश' २०१४ (सं. हरेराम 'समीप'),
- (ख) गुज़लें : 'गुज़लांजलि' (सं. रामगोपाल 'परदेसी'), 'गुज़ल दुष्यंत के बाद' खंड-१ (सं. दीक्षित दनकौरी), 'सात आवाजें, सात रंग' (सं. ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'),
- (ग) अशआर : 'कवियों की शाइरी' (सं. शेरजंग गर्ग),
- (घ) नज़्म : 'वसंत का अग्रदूत' (सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'), 'इदं इंद्राय' (सं. योगेन्द्र दत्त शर्मा व अन्य), 'गूँज' (सं. देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' व अन्य), 'राग और पराग' (सं. योगेन्द्र दत्त शर्मा व अन्य),

(च) भूमिका : ‘समुंदर हृद में रहता है’ (ग़ज़ल संग्रह- कवि : देवेन्द्र शर्मा ‘इन्द्र’),  
‘परवाज़’ (ग़ज़ल संग्रह- कवि : सतीश कौशिक),  
‘मौन की बाँसुरी’ (ग़ज़ल संग्रह- कवयित्री : तारा गुप्ता),

(छ) संस्मरण : विश्व प्रकाश दीक्षित ‘बटुक’ (‘आजकल’, ‘प्रैस मैन’),  
देवेन्द्र शर्मा ‘इन्द्र’ (‘सार्थक’ विशेषांक, ‘वाबूजी का भारत’  
‘मित्र’ विशेषांक, ‘प्रैस मैन’, ‘इदं इंद्राय’),  
‘देवेन्द्र शर्मा ‘इन्द्र’ : व्यक्ति और अभिव्यक्ति’),  
योगेन्द्र दत्त शर्मा (‘वह अभी सफ़र में है’),  
श्याम निर्मम (‘सुखियों की बैंजनी खामोशियाँ’),  
से.रा. यात्री (‘शीतल वाणी’ विशेषांक),  
पाल भसीन (‘रमता जोगी, बहता पानी’)।

#### अनुवाद :

क्रोएशियन कहानी व कविताओं का हिन्दी अनुवाद (भारत  
में क्रोएशियन दूतावास द्वारा प्रकाशित ग्रंथ ‘क्रोएशियन  
साहित्य’ में प्रकाशित), क्रोएशियन बालगीत के अनुवाद  
(‘आजकल’ में प्रकाशित)

#### समीक्षा व आलेख :

दोहा, गीत व ग़ज़ल पर आलेख तथा इन विधाओं के संग्रहों  
की समीक्षाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

#### यात्रा-संस्मरण :

यूरोप प्रवास, अमेरिका, सिंगापुर, नेपाल, दुबई, शारजाह,  
आबूधाबी, अंडमान, श्रीनगर, मनाली व कुरुक्षेत्र भ्रमण के  
संस्मरण विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

**अन्य :**

(क) अनेक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 'सर्वियन व क्रोएशियन भाषा साहित्य में भारत का स्थान' विषय पर वार्ताएँ व लेख; (ख) ज़ाग्रेब (क्रोएशिया) रेडियो व टी.वी. पर भारत संबंधी वार्ताएँ; (ग) दिल्ली दूरदर्शन व आकाशवाणी से हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा की रचनाएँ प्रसारित; (घ) गीत, ग़ज़ल, दोहे तथा अन्य रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित; (च) विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर तथा हास्य-व्यंग्य की विधा में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी एवं ब्रज भाषा में नियमित काव्य-लेखन।

**सम्प्रति :**

पटेल चैस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्ति के पश्चात् समाज सेवा एवं काव्य-सर्जना में व्यस्त।

**सम्पर्क :** 11/108, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, ग़ाज़ियाबाद-201005

**मो. :** 9871437552, 8368450517



अनुभव प्रकाशन

गाजियाबाद • दिल्ली • देहरादून • लखनऊ



Rs. 150.00

ISBN : 978-93-84772-72-2